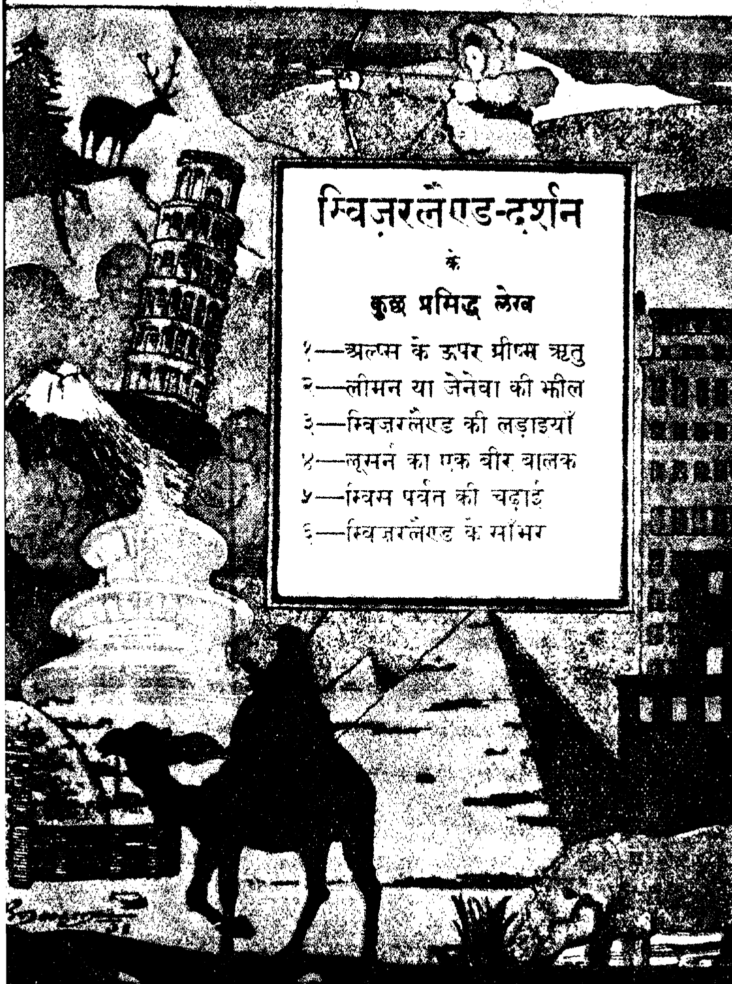
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—४८



स्विज़रलैंड-दर्शन

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—अल्प्स के ऊपर ग्रीष्म ऋतु
२—लीमन या जेनेवा की झील
३—स्विज़रलैण्ड की लड़ाइयाँ
४—लूसर्न का एक वीर बालक
५—स्विस पर्वत की चढ़ाई
६—स्विज़रलैण्ड के सौंभर

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

सितम्बर, १९४३] **देश-दर्शन** [आश्विन २०००

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ५] [illegible] { संख्या ४ / पूर्ण संख्या ४८

[illegible]

सम्पादक [illegible]

[illegible]

प्रकाशक

[illegible]

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची



स्विटज़रलैंड का प्रसिद्ध लेखकों ने योरुप के खेल का मैदान (दि प्ले ग्राउन्ड आफ योरुप) कहा है। इसका कारण यह है कि सभी राष्ट्रों के निवासी यहां अपनी छुट्टियां बिताने आते हैं और तरह तरह से आनन्द मनाते हैं। यहां दो प्रकार के यात्री आते हैं। एक तो वे लोग होते हैं जो केवल देखने आते हैं और दूसरे वे लोग हैं जो यहां आकर सभी प्रकार से खेलों में सम्मिलित होते हैं। यह लोग पहाड़ों की बर्फ़ीली चोटियों पर चढ़ते हैं और भांति भांति के आनन्द और कष्टों का अनुभव करते हैं।

अल्प्स की बड़ी श्रेणियों ने स्विटजरलैंड को बहुत सुन्दर बना दिया है। इनमें से बहुत सी श्रेणियाँ सदैव बरफ़ से ढके रहने वाले स्थानों से भी अधिक ऊँची हैं। जब नीचे घाटियों में गर्मी पड़ती है तभी इन स्थानों पर कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। इन्हीं श्रेणियों के बीच संसार के कुछ अनुपम सुन्दर दृश्य पाये जाते हैं। इन पर बड़े बड़े दर्रे और चट्टानें हैं। ये चट्टानें लटकती हुई दिखाई पड़ती हैं। यहां पर झीलें हैं। जिनमें हजारों छोटे छोटे सोते पर्वतीय श्रेणियों से पानी लाते हैं। श्रेणियां जो बरफ से ढकी हैं वे बहुत ही विशाल

और मनोहर हैं। सूर्यास्त के समय इनका दृश्य और भी अधिक सुन्दर हो जाता है। श्रेणियों का रंग लाल, सुनहरा और गुलाबी हो जाता है।

यही सुन्दरता स्विस लोगों का मुख्य धन है। यहां के निवासी मितव्ययी और परिश्रमी होते हैं। जो कुछ उनके पास होता है उसका ये लोग बड़ा सदुपयोग करते हैं। यहां के मज़दूर चतुर और परिश्रमी होते हैं। यहां के किसान भूमि का एक एक इंच जोत डालते हैं। और घास ऐसे ऐसे स्थानों से काट लाते हैं जहाँ पर केवल बकरियां ही जा सकती हैं किन्तु यह सभी बेकार होता यदि विदेशी यात्री यहां न आते और रुपया पानी की भांति न बहाते।

भूमि का एक बहुत बड़ा भाग पहाड़ी ऊसर और बर्फीली पहाड़ी श्रेणियाँ हैं। इन भागों से किसान या चरवाहों को कुछ प्राप्त नहीं होता किन्तु यात्री लोग दूर दूर से इन्हीं स्थानों पर आनन्द लेने आते हैं। यहां कोने कोने पर होटल बन गये हैं जहां पर यात्रियों को ठहरने का स्थान और आनन्द प्राप्त होता है। इन्हीं

होटलों में अधिकांश लोगों को काम मिलता है और लाभ भी बहुत होता है।

यहां के होटल वालों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वे लोग ऋतुओं के बेचने वाले हैं। यह बिलकुल सत्य है। बहुत से होटलों के मालिक नीचे घाटियों में भी अपने अपने होटल रखते हैं। घाटियों में कड़ाके की गर्मी रहती है। इस समय अंगूर पकने लगते हैं। धूप इतनी कड़ी होती है कि छाया आवश्यक हो जाती है। दोपहर के समय भारतवर्ष की भांति गांवों में लोग सोते हैं। क्योंकि धूप और गर्मी इतनी कड़ी होती है कि घूमना कठिन हो जाता है।

कई हज़ार फुट ऊपर दूसरे होटल होते हैं। यह बहुधा चरागाहों के पास स्थित होते हैं। यहाँ पर रंग विरंगी पुष्प वाटिकाएँ होती हैं। यहाँ की वायु सुन्दर, ताज़ी और सुगन्धित होती है। यहाँ इस समय बसंत ऋतु होती है जब कि इसी समय घाटियों में ग्रीष्म ऋतु होती है। इससे भी और ऊपर छोटे होटल होते हैं। यहाँ पर अल्पस के ऊपर चढ़ने वाले यात्री ठहरते हैं। यहाँ से थोड़ी यात्रा के बाद यात्री शीत कालीन प्रान्त में

पहुँच जाते हैं। यहाँ पर कुहरा, बरफ और ग्लेशियर होते हैं। बरफ के बड़े बड़े तूदे और ढालों पर चढ़ना बड़ा ही खतरनाक होता है। क्योंकि यदि ज़रा भी पैर फिसला तो मृत्यु का कारण हो सकता है।

इस छोटे से देश में यात्री को भ्रमण करने पर शीघ्र ही ज्ञात हो जाता है कि यहाँ के निवासी एक जाति के वंशज नहीं हैं और न वे एक भाषा का ही प्रयोग करते हैं। एक अनोखी विचित्रता यह है कि इस छोटे से देश में कई भाषाओं, धर्मों और जातियों का सम्मेलन है। उत्तर और केन्द्रीय भाग में जर्मन स्विस बसते हैं जो अधिकतर जर्मन भाषा का प्रयोग करते हैं। पश्चिम की ओर फ्रांसीसी भाषा बोली जाती है। दक्षिण की ओर इटैलियन भाषा का प्रयोग होता है। ग्रीसन्स प्रदेश में लैडिन बोली जाती है। भाषा की भाँति धर्म भी प्रत्येक भाग के अलग अलग हैं तो भी सभी कट्टर कैथालिक्स और लूथरेन सभी शान्तिपूर्वक साथ साथ रहते हैं। भाषा धर्म और जाति की इतनी भिन्नता होते हुये भी यहाँ के निवासी अपने देश की रक्षा के लिये एक

होकर जान देते हैं। ये सभी जातियाँ मिलकर एक स्विटजरलैंड राष्ट्र बनाते हैं।

स्वतंत्रता और देश के प्रेम सूत्र में ही ये लोग एक साथ बँधे हैं। यहाँ के निवासी यहाँ के पर्वतों को बहुत प्यार करते हैं। इन्होंने भयानक युद्ध इनकी रक्षा के लिये लड़े हैं। हजारों साल से यहाँ पंचायती राज्य है। यह स्वयं अपना राज्य शासन करता है। यह न तो किसी पड़ोसी राष्ट्र को कुछ देना चाहता है और न कुछ लेना चाहता है। हां एकता और शान्ति का उपदेश यह दूसरों को देते हैं।

अल्प्स के ऊपर ग्रीष्म ऋतु

आल्प क्या है? यह ग्रीष्म ऋतु का घास का मैदान है। जिसमें सुन्दर मुलायम घास होती है और भाँति भाँति की पुष्प वाटिकाएं होती हैं।

सदैव बर्फीले स्थानों पर देखा जाता है कि वहां खुले घास के मैदान हैं। जहां पर गर्मी की छोटी सी ऋतु के मुलायम घास और फूलों की सुन्दर वाटिकाएं

दिखाई पड़ती हैं। यही असली आल्प्स हैं। इन्हीं से बर्फीली पर्वतीय श्रेणियों ने अपना नाम पाया है।

लगभग सभी अल्पाइन गावों में उनके अलग २ आल्प होते हैं जिसके बिना कार्य नहीं चल सकता। गावों के चारों ओर चरागाहें होती हैं किन्तु यहां की घास गर्मी के दिनों में सुखाकर जाड़े के दिनों के लिये रख दी जाती है। चरागाहों के ऊपर बन हैं इन बनों से शीतकाल के जलाने के लिये लकड़ी आती है। बनों और बर्फीले मैदानों के बीच में आल्प्स हैं। इन आल्प्स पर गर्मी के दिनों में जानवरों के गल्ले चरा करते हैं जिस समय कि घाटियों में चरागाहों की घास सुखाई और इकट्ठा की जाती है।

इन अल्पाइन चरागाहों में यहाँ वहाँ चरवाहों के लकड़ी के झोंपड़े होते हैं। जहाँ पर यह चरवाहे ग्रीष्म ऋतु में रहते हैं। इन आल्प्स के ऊपर चरागाहों में जानवरों के साथ शीतकाल के आगमन तक रहते हैं। शीतकाल आजाने पर ये सब नीचे चले आते हैं। इनका मार्ग लगभग दो दिन का होता है।

जिस दिन अल्पाइन घास के मैदानों के लिये जानवर ऊपर जाते हैं। वह दिन बड़े महत्व का होता है। यात्रा के दिन प्रातःकाल तमाम गांव में खलबली मच



जाती है। मनुष्यों की भाँति जानवर भी बड़े प्रसन्न होते हैं कि आल्प्स पर जाने की तय्यारी हो रही है। यह जानवर जब लम्बे चौड़े जुलूस में चलते हैं तो मारे खुशी के झूमते, उछलते, कूदते और दौड़ते चलते हैं।

सर्वोत्तम श्रेणी वाले जानवर आगे २ चलते हैं। उनके गलों में घंटियां बंधी रहती हैं और उनके सींग पुष्पों से सुसज्जित रहते हैं।

लड़के लोग सब से अधिक ऐसे अवसर पर प्रसन्न होते हैं। ये लड़के तय्यार होकर गल्लों के साथ चरवाहों की सहायता को ऊपर जाते हैं। जाते समय वह अपना प्यारा गीत गाते हैं गीत का पहला पद "श्रेष्ठ है जीवन आल्प्स का" है। सचमुच इस जीवन को वे गौरव पूर्ण पाते हैं। यह लोग नीचे घाटियों से ऊपर वनों और बर्फीले मैदानों के बीच के मैदान में चले जाते हैं। यहां प्रत्येक दिन खुली हवा में व्यतीत होता है। इनकी दिनचर्या यहां पर धूप खाना, सुन्दर पुष्प तोड़ना, पहाड़ी खुली हवा खाना, सुन्दर मीठा दूध पीना आदि २ होती है।

जानवर जिस भांति अपनी प्रसन्नता का परिचय

देते हैं उसे कोई व्यक्ति नहीं भुला सकता। इस प्रसन्नता का परिचय जब वे अपने बाड़े से बाहर चरने को जाते हैं तो भली भांति देखा जा सकता है। आल्प्स के ऊपर के आनन्द को यह जानवर इस प्रकार समझते हैं कि जो जानवर नीचे घाटी से छूट जाता है उसकी बड़ी देख भाल रखनी पड़ती है अगर वह छूट गया तो फिर वनों में होता, ढालों पर चढ़ता, शिलाओं को पार करता अपने साथियों से जा मिलता है।

जानवरों का समूह या गल्ला बड़ा ही चतुर होता है। यहां की गाएँ, सुन्दर घास, पानी के स्थान, झाड़ी-झुरकुटी इत्यादि सभी वस्तुओं से भली प्रकार परिचित होती हैं। ये अपने दुहने का समय भली भांति जानती हैं। जब इनके चरवाहे बुलाते हैं तो दूर से यह उनकी आवाज़ पहचान कर उनके पास चली जाती हैं। ये प्रत्येक भांति के भोजनों के खाने पीने का समय जानती हैं। तूफान आने का समय पेड़ सूँघ कर मालूम कर लेती हैं। विकार घास बजड़ी बूटियों को छोड़ देती हैं और खतरनाक स्थानों पर नहीं जातीं। यदि तूफान आने को हुआ तो यह पहले ही इकट्ठा हो जाते हैं।

सभी मर नीचे किये घूरती दृष्टि से देखती रहती हैं। चरवाहे घूम घूम कर इन गल्लों को हिम्मत बँधाते व चुमकारते रहते हैं। चाहे जितना बड़ा तूफान आवे एक भी गाय टस से मस नहीं होती।

यहां पर दूध का मक्खन बनाया जाता है। जब सितम्बर में नीचे वापस आना होता है तो मक्खन के बड़े २ बोझ नीचे लाए जाते हैं। जिन झोपड़ों (चैले-टस) में चरवाहे मक्खन बनाते हैं वे बड़े सीधे सादे होते हैं। ये झोपड़े लकड़ी के लट्ठों के बने होते हैं। इनके दराजों और छिद्रों" में सेवार और काई भर दी जातो है। यदि यह झोपड़े ऊपर नंगे ढालों पर बनाए गए। तो फिर इनकी दीवालें अनगढ़ पत्थरों की बनाई जाती हैं। दरारें और छिद्र काई या सेवार से बन्द कर दिये जाते हैं। इनकी छतें लकड़ियों के टुकड़े, घास और मिट्टी के टुकड़ों से बनाई जाती हैं। इनके ऊपर भारी पत्थर रख दिये जाते हैं जिससे उड़कर बाहर जा सकें।

चरवाहे आल्प्स को दो भागों में बाँट देते हैं। एक तो वह भाग होता है जो बराबर, लम्बा चौड़ा होता है। जहां घास आसानी से चरी जा सकती है। यहाँ

जनवर चरते हैं। दूसरा भाग भेड़ों और बकरियों की चारागाहें होती हैं। यह ऊँचे आल्प्स होते हैं। पहाड़ी और खतरनाक मार्गों द्वारा पहुंचे जा सकते हैं। ये भेड़ें और बकरियाँ चतुरता और फुर्ती के साथ ऐसे २ स्थानों पर चली जाती हैं जहां कोई दूसरा पशु नहीं पहुंच सकता। कभी कभी घास के मैदानों के बीच में होते हैं। या पहाड़ी ऊंची नीची चट्टानों के बीच में यह टुकड़े होते हैं। ऐसी घास केवल भेड़ या बकरियों द्वारा ही चरी जा सकती हैं।

चरवाहों में गड़रियों का जीवन बड़ा ही उदास और बेरस होता है। बहुधा हजारों भेड़ बकरियों का समूह एक ही गड़रिये के अधिकार में होता है। सारा समय उसे केवल उसी गल्ले की रखवाली में बिताना पड़ता है। उसके कोई दूसरा कार्य नहीं होता दूसरी ओर और दूसरे पशुओं के चरवाहे कार्यों में व्यस्त रहते हैं। रोज, प्रातः और संध्या काल गायों को दुहना पड़ता है। ऐसे समय चरवाहे और मक्खन बनाने वाले एक जगह बैठकर गपशप लगाते हैं। मक्खन बनाना पड़ता है। सुवरों को चराना पड़ता है। इस लिये

लगभग दिन का प्रत्येक घंटा किसी न किसी कार्य में ही व्यतीत होता है। मक्खन का मट्ठा इन्हीं सुवरों को खिलाया जाता है।

आल्प्स के ऊपर चरवाहे एक लकड़ी का बाजा अपनी गायों को बुलाने के लिये बजाते हैं। यह बाजा लकड़ी का बना होता है और यह ५ या ६ फीट लम्बा बड़ा मुख वाला होता है। संख या बांसुरी की भांति यह बजाया जाता है। इनके मुख में मुहद्वार ज़ोर से फूंक कर बाजा बजाया जाता है। यह बाजा लगभग सभी चरवाहे अपने २ स्थानों पर बजाते हैं।

संध्या समय यह बाजा बहुत ही सुहावना होता है। ऊँचे आल्प्स पर जहाँ कि कोई शब्द नहीं पहुँच सकता। वहाँ यह बाजा संध्याकाल का आगमन बताता है। जैसे ही सूर्यदेव अस्ताचल की ओर अग्रसर होते हैं वैसे ही चरवाहा अपने लकड़ी के लम्बे बिगुल को उठाता है और ईश्वर की प्रार्थना का समय जान भरपूर इस बाजे को बजाता है। उसके दूसरे साथी और दूसरे स्थानों के लोग उसका अनुकरण करते हैं। इस प्रकार सारा का सारा पहाड़ी और बरफ़ीला प्रदेश इस सुरीली

आवाज़ से गुनजान हो जाता है। जब यह बाजे बारी २ से बजते हैं तो बड़ा ही सुहावना मालूम होता है। यह बाजा संध्या कालीन पूजा का चिन्ह होता है और आदेश करता है कि अब रात का आगमन है। इसलिये सभी पशुवों व मनुष्यों को अपने २ स्थानों पर रात्रि बिताने व निद्रा देवी की गोद में कुलेलें करने के लिये पहुँच जाना चाहिये।

देहाती घर

निःसन्देह ही और देशों की भांति यहां पर भी कहीं कहीं लकड़ी के झोपड़ों की भांति घर दिखाई देते हैं किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। बाकी सभी स्विस लोगों के मकान सुन्दर, साफ सुथरे, मज़बूत और आनन्दमयी होते हैं।

यह घर काफी लम्बे चौड़े होते हैं। जिसके कारण यह बलवान तूफानों का अड्डा ले सकते हैं। मकान बनाने वाले पहले ७ या आठ फीट की मज़बूत नींव उठाते हैं। उसके ऊपर लकड़ी का मकान बनाया जाता



है। छत ढालू बनाई जाती है। यह छत देवदार के तख्तों से बनाई जाती है। इन तख्तों के ऊपर अक्सर भारी २ पत्थर रख दिये जाते हैं जिससे आंधी और तूफ़ान में छत उड़ या फट न सके। दीवाल के चारों ओर छज्जा होता है। इन छज्जों के ऊपर काफी चौड़ी आलसी (ओरी) है। ऐसे घर भीतर व बाहर दोनों ही ओर से सुन्दर और आनन्ददायक होते हैं।

नीचे के भाग में जिसका फर्श पथरीला होता है रहने के कमरे नहीं होते। मकान के इस अगले भाग में छोटी २ कोठरियाँ होती हैं। इनमें खेती बारी की की पैदावार रक्खी जाती हैं। इनमें खेती बारी की पैदावार रक्खी जाती है मकान की पिछले भाग में स्तबल, वगर (पशुओं के रहने के स्थान) और माड़ने कूटने के लिये फर्श होते हैं। रहने के कमरे ऊपर होते हैं। यह कमरे खुले हवादार होते हैं। एक बड़ा कमरा होता है जहाँ पर घर के सभी प्राणी बैठकर भोजन करते हैं और संध्या समय बैठते हैं। एक दूसरा छोटा कमरा होता है जहाँ पर सभी प्रकार के सजावट के सामान होते हैं। यह कमरा महान-अवसरों पर काम में लाया जाता है।

एक और सैनगृह होता है। यह कमरा सर्वोत्तम होता है इसमें लोग आराम करते व सोते हैं। इसके सिवा दो तीन और छोटे छोटे कमरे होते हैं जहां बच्चे सोया करते हैं।

इन घरों के सामान बड़े मज़बूत किन्तु सीधे सादे होते हैं। यह सामान अखरोट की लकड़ी के बनाये जाते हैं। इनको या तो गांव का बढ़ई बनाता है या स्वयं घर का मालिक बना लेता है। बड़ी बड़ी मेज़ें बेंचें, पाकशाला की चौकी के ऊपर चित्रकारी की हुई तशतरियाँ लगी होती हैं। एक बड़ी भट्टी मिट्टी की होती है जो बहुधा हरे खपड़ों से छाई रहती है।

इन घरों का कायदा यह है कि रुपया पैसा आराम की आवश्यक वस्तुएँ सभी होती हैं। जहाँ प्रत्येक वस्तु मोल लेनी होती है वहां रुपया पैसा का होना बड़ा आवश्यक होता है। किन्तु इन स्विस लोगों को खरीदना ही क्यों होता है। काफी, चीनी, शक्कर, नमक, मसाला इत्यादि छोड़ कर और इन्हें कुछ नहीं खरीदना पड़ता।

सैन गृह में एक कोने पर करघा होता है। जिसमें यहां के निवासी अपनी भेड़ों का ऊन कातकर कपड़े



बनाते हैं। पुष्पवाटिकाओं में यहां के निवासी तरकारी पैदा करते हैं। वाटिकाओं में यह लोग अंगूर और दूसरे फल अपने लिये पैदा कर लेते हैं। खेती से अनाज पैदा करते हैं। सेब, नाशपातियों को काट २ कर सुखा लेते हैं और सावधानी से जाड़े के लिये रख लेते हैं।

इनके रहन-सहन बहुत ही सरल है। बहुधा मांस का प्रयोग नहीं होता। कुछ घरों में तो इतवार के दोपहर के भोजन के सिवा और कभी भी मांस का प्रयोग नहीं होता। ताज़े मांस का प्रयोग यह लोग कदाचित ही कभी करते हैं। इनके कमरे में भेड़ और गाय के सुखाए मांस लटकते रहते हैं। स्विस लोग मांस को एक अद्भुत रूप से बनाते हैं जिसे पहले गोश्त की चिमनी के ऊपर लटका देते हैं। जहां पर वह खूब धुवां खाता है। उसके पश्चात् नमक मिर्च मसाला डाल कर साफ किया जाता है फिर जाड़े के साफ, सुथरी ठंडी हवा में सुखाया जाता है। जब यह भून कर खाया जाता है तो बड़ा ही स्वादिष्ट होता है।

यहां के लोग दूध, दही, पनीर, खोया, मक्खन,

दही मट्ठा इत्यादि बनाते हैं और उनका प्रयोग करते हैं। ये सभी वस्तुएँ बड़ी स्वादिष्ट होती हैं। पनीर और दही को मलाई में डालकर उबालते हैं। फिर उसे ताजे मक्खन में डाल कर पकाते हैं। यह मिठाई स्विस लोगों को बहुत पसंद होती है।

लड़के सवेरे स्कूल जाने के पहले मक्खन और पनीर से रोटी खाते हैं या मकई दूध में मिलाकर खाते हैं। ऊपर से काफी पीते हैं। दोपहर के समय इनको रोटियां मक्खन का दूध और शोरबा मिलता है। अच्छे घरों में इस समय गुलगुला और पूरी कचौड़ी का भी प्रयोग होता है। सँध्या समय का भोजन (वियारी) सवेरे की भांति ही होता है। यहां के बच्चे अत्यन्त सुन्दर, सुडौल, बलवान और मजबूत होते हैं।

जलाने की लकड़ी यह लोग पहाड़ों से काटते हैं किन्तु हर एक जगह से पेड़ नहीं काटे जा सकते यहाँ तक कि कोई अपने स्वयं जंगल से नहीं काट सका। यहां सभी जङ्गल प्रकृति के माने जाते हैं। यहां बन सम्बन्धी क़ानून बड़ा कड़ा है। जङ्गल के अफ़सर कटने वाले पेड़ों पर निशान लगा देते हैं। इन्हीं पेड़ों को लकड़हारे

काट सकते हैं अन्यथा नहीं। ये पेड़ जाड़े के दिनों में काटे जाते हैं।

लकड़ियों के बड़े बड़े लठ्ठे काट कर छोड़ दिये जाते हैं। वसंत ऋतु में जब बरफ़ पिघलती है तो यह लट्ठे सोतों और नदियों द्वारा नीचे लाये जाते हैं। घाटियों में आकर यह निकाल लिये जाते हैं और सूखने के लिये डाल दिये जाते हैं। ये लट्ठे आने वाले शीत काल के पहले ही इस्तेमाल करने योग्य टुकड़ों में काट डाले जाते हैं।

लीमन या जेनीवा की झील

स्विज़रलैन्ड की झीलें यहाँ के अनुपम सौन्दर्यों में से हैं। यहां छोटी बड़ी अगणित झीलें हैं। यह देश बिलकुल पहाड़ी है। प्रत्येक पहाड़ी मोड़ या घेरे में कोई न कोई घाटी है और प्रत्येक मोड़ में पानी के सोते और झीलें हैं। कहीं तो ये झीलें एक सरोवर की भांति हैं और कहीं एक समुद्र की भांति हैं जिनमें भाप वाली नावें चलती हैं और तूफान आते हैं। सब से

बड़ी जेनीवा की झील है और सब से अधिक सुन्दर लूसरनी (Lucerne) की झील है।

जेनीवा या लीमन झील केवल स्विटज़रलैंड की ही झील नहीं है वरन् इसके किनारे का कुछ भाग फ्रांस का है। किन्तु इसके ऊपर के मुख्य नगर स्विस हैं और पश्चिमी किनारे पर सर्व प्रसिद्ध जेनीवा नगर स्थित है।

यह झील लम्बी तो काफी है किन्तु चौड़ी कम है रोन नदी इसको भरने के बाद फ्रांस में बहती है। इसका पानी नीले गहरे रँग का है। इसमें होकर रोन नदी की नीले जल की धार बहती है। जेनीवा से कुछ ही दूर नीचे आरवी और रोन का सौन्दर्य देखने में आता है। कुछ दूर तक यह दोनों नदियाँ मिलकर साथ २ बहती हैं। जिससे एक ओर तो साफ, तेज़ नीली धार दिखाई देती है और दूसरी ओर मटमैला भूरे रंग की सुस्त धार आर्वी की है। नीचे आकर दोनों का संगम हो जाता है और आरवी सारे पानी को मटमैला बना देती है।

जेनीवा से एक सुहावनी यात्रा की जा सकती है।

यह यात्रा स्टीमरों पर होती है। किनारे के तमाम नगरों का भ्रमण करते हुए स्टीमर फिर जेनीवा नगर में जा पहुँचता है पानी से अच्छे सुन्दर दृश्य दिखाई देते हैं। छोटी २ किनारे की पहाड़ियां ही नहीं वरन पहाड़ियों का राजा मान्ट ब्लाक भी दिखाई पड़ता है। जिसके चारों ओर सुन्दर बर्फीली पहाड़ियां हैं।

लीमन झील के देखने का सब से अच्छा समय बसन्त ऋतु का है। इसके किनारे गर्म और धूप वाले होते हैं। चारों ओर पहाड़ियों के होने के कारण ठंडी हवा नहीं आने पाती। पूर्व की ओर बर्नीज आवरलैन्ड और पश्चिम की ओर मान्ट ब्लान्क का पर्वतीय बर्फीली चोटियां हैं।

यह स्थान देखने योग्य है। बसन्त ऋतु में इन कम ऊँचे पर्वतों पर लोग आसानी से चढ़ जाते हैं। यहां ऊँचाई पर पुष्प वाटिकाएँ बहुत ही सुन्दर और अलौकिक होती हैं। जो लोग पहाड़ी मार्ग पर चढ़ नहीं सकते उनके लिये रेलें हैं। वे इन्हीं रेलों द्वारा ऊपर जाते हैं। जब वह आल्प्स के ऊपर पहुँचते हैं। तो नीचे देखने पर उन्हें प्रतीत होता है कि शायद

नगर उनके बिलकुल नीचे है। घर गुड़ियों की भांति, नदी चाँदी के डोरे का भाँति और रेलगाड़ो कोड़े की भाँति चलती दृष्टिगोचर होती है।

रेलगाड़ी यात्रियों को ऊपर बर्फ के किनारे छोड़ती है। ये पर्वत तमाम जाड़े में बर्फ से ढके रहते हैं। बसन्त में इनकी बरफ पिघलने लगती है। और बरफ की रेखा धीरे धीरे ऊपर हटनी जाती है। दिन प्रति दिन पहाड़ी भाग खुलता जाता है और घास के मैदान और देव-दार के जंगल दिखाई पड़ने लगते हैं। सभी सोते इस समय भरे होते हैं। प्रत्येक दरार, गढ़ा और खाईं एक प्रकार का जल प्रवाह होता है। सभी में पिघलती बरफ का पानी और बरफ के टुकड़े तेज़ी से बहते रहते हैं।

पुष्प वाटिकाओं के दृश्य और दृश्यों से अधिक सुन्दर होते हैं। बर्फ के किनारे पर इनकी खान है। जैसे ही शीतकाल की बरफ पिघलती है ये फूल बड़ी तेज़ी के साथ घास के मैदानों में उगते हैं। जादू की भांति शीघ्र ही आल्प को ये पुष्प सुन्दर चोखे रंग से भर देते हैं।

लाल, नीले, पीले, हरे, भूरे सभी रंगों के फूल होते



हैं। प्रत्येक रँग यहां की घाटियों से अधिक चमकीला और सुन्दर होता है। यहां के फूलों का राजा अल्पाइन गुलाब है। यह चाहे अकेला चट्टान पर हो या इस की सारी वाटिका हो या अपने और दूसरे रंग के बसंती फूलों के साथ हो। प्रत्येक स्थान में इसका रंग निराला रहता है।

लीमन झील के पूर्वी किनारे पर चीलन का क़िला है इस क़िले को देखने सभी यात्री जाते हैं। बायरन की "चिलन के क़ैदी" नामक कविता बहुत ही सुन्दर है किन्तु वह ऐतिहासिक रूप से सत्य है। इस कविता का मुख्य पात्र बोनिवर्ड है। यद्यपि यह सत्य है कि यहां १५३० से १५३६ तक बोनिवर्ड नामक व्यक्ति क़ैद रहा। तो भी उसका जीवन ऐसा नहीं था जैसा कि कविता में है। यह किला देखने योग्य है। यह बहुत प्राचीन है। इसकी स्थिति झील के किनारे एक बहुत ही सुन्दर अनोखे स्थान पर है। इसके चारों ओर सुन्दर पहाड़ियां हैं।

चार कैन्टन का झील

लूसर्न की दिव्य झील चार परगने (कैन्टन) की झील के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसका कारण यह है। कि इसके चारों ओर चारों परगने हैं, जिन्होंने मिलकर स्विटज़रलैंड का प्रजातंत्र राज्य बनाया। इस झील की कोई आकृत नहीं है। इसमें बहुत सी खाड़ियां हैं और इसकी पतली लम्बी शाखें अन्दर दूर जमीन तक चली गई हैं। इसके किनारे बड़े ही सुन्दर हैं। यह किनारे स्टीमर के ऊपर से भली भांति देखे जा सकते हैं। बोट की चाल के साथ साथ यहां का दृश्य बदलता रहता है। कभी केवल नंगे पहाड़ी ढाल दिखाई पड़ते हैं तो कभी अंगूरों की लताएं आती हैं। फिर पुष्प बाटिकाएँ व घास के मैदान होते हैं। फिर बनों व बर्फीली चोटियों का नम्बर होता है इत्यादि इत्यादि। इस प्रकार बहुरंगे दृश्य दिखाई पड़ते हैं। यहां से रिगी और पिलाटस पहाड़ भी दिखाई पड़ते हैं।

रिगी स्विटज़र लैन्ड के प्रसिद्ध पहाड़ों में से है। यह अपनी ऊंचाई के लिये प्रसिद्ध नहीं है। लूसरीन के यात्री यहां तमाम गर्मी भर रहते हैं। यहां से बर्फीली

शिलाओं का अपूर्व दृश्य देखने में आता है। इसके ऊपर रेल द्वारा आने के मार्ग हैं। दूसरा पर्वत पिलाटस का है। यह सचमुच एक पर्वत की भांति टूटा फूटा ऊंचा नीचा है। इसलिये इस पर चढ़ना कठिन है। इस पर भी लोग रेलगाड़ी द्वारा जाते हैं।

पिलाटस के बारे में एक प्राचीन कहावत है। पाँटियस-पाइलेट नामक एक जज था। इसने ईसूमसीह को सज़ा दी। जज की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा दुखित तमाम पृथ्वी पर मारी २ फिरती रही। उसे कहीं शांति नहीं मिली। अब वह पर्वत के ऊपर झील में आई तो उसे शांति मिली। तब से साल में एक दिन पर्वत के ऊपर अंधेरा रहता था, जिसका अर्थ उसी दुखी आत्मा से था। किन्तु एक बार एक विद्वान ऊपर गया उसने समझा बुझा कर उस दुखी आत्मा को शान्त किया। तब से फिर पाइलेट की आत्मा नहीं दिखाई पड़ी। किन्तु फिर भी सैकड़ों वर्षों तक स्विस लोग झील के समीप नहीं गए। उनका विचार था कि अगर उस आत्मा की छाँह पड़ गई तो बुरा हाल होगा।

पिलाटस लूसर्न का ऋतु-पर्वत है। यदि इसका

ऊपरी भाग साफ सुथरा और अच्छा रहा तो वर्षा दूर रहती है। और यदि बादलों की टोपी इसके सर पर रही तो वर्षा अवश्य होती है।

लूसर्न का छोटा नगर बहुत ही सुन्दर है। गर्मी में इस नगर में बड़ी खुशी व चहल-पहल रहती है। यह स्विटज़रलैन्ड के यात्रियों का मुख्य केन्द्र है। इसके बांध टहलने के लिये अच्छे सुहावने स्थान हैं। ये बांध लम्बे चौड़े हैं इनके ऊपर दानों ओर दुकानें हैं। यहां लोग टहलने के लिये आते हैं। यहां से झील का सुन्दर दृश्य देखने को मिलता है। यहां की संध्या बड़ी सुहावनी होती है। खासकर शुक्ल पक्ष की संध्या तो अनुपम होती है। चन्द्रदेव अपनी ज्योति से इसके दृश्यों को और भी सुन्दर बना देते हैं। बत्तीदार नावें पानी के ऊपर जुगनू की भांति इधर उधर उछलती दिखाई पड़ती हैं। योरुप के कोने २ से यात्री ऐसे समय यहाँ आते हैं और नाच-गान तथा खुशियाँ मनाते हैं। यहाँ नाव नेवरिया खेलने का आनन्द यहाँ का खेलाड़ी ही जान सकता है।

लूसर्न का पुराना और नया दो भाग है। पुराना



लूसर्न रियुस नदी के इधर उधर बसा है। यह नदी पुराने पुलों के नीचे होकर बहती है। इन पुलों पर अनोखे चित्र बने हैं। पुराने नगर की दीवारों पर पहरा देने वाले स्तम्भ पांच सौ साल के पुराने अब भी खड़े हैं। इन स्तम्भों पर बैठकर लोग अपने बैरियों को ताकते थे। कुछ पुराने घर बड़े अनोखे ढंग के हैं। इनकी छतें, दीवारें, खम्भे सभी चित्रों से भरपूर हैं। इनकी चित्र-कारी पुराना इतिहास बताती है।

लूसर्न में सब से सुन्दर प्रसिद्ध सिंहस्मारक है। इसको सभी यात्री देखने जाते हैं। थार्न-वाल्डसेन शिल्पकार ने पहाड़ की समूची शिला काट कर इसे बनाया है। यह स्मारक फ्रेंच रिवोल्यूशन के समय मारे गये स्विस गार्ड्स का है। फ्रान्स के राजा का यह रिवाज था कि वह स्विस तन रक्षक (बाडी गार्ड) रखते थे। जब १० अगस्त सन् १७९२ ई० में पेरिस के महल पर धावा हुआ। तो इन स्विस तन रक्षकों ने लड़ते लड़ते अपने प्राण दे दिये।

पास ही यहाँ "ग्लैशियर गार्डेन" है। यहाँ पर

ग्लैशियर चक्कियों का समूह है। चक्कियां के यह छेद पानी के बहाव के कारण घिस कर हो गए हैं।

लूसर्न का समीपवर्ती भाग बड़ा ही सुन्दर है। इस भागमें इतिहास सम्बन्धी बहुत ही वस्तुएं हैं। यह स्थिम कथा कहानियों का केन्द्र है। इसी के किनारे पर कई बहादुर इकट्ठे हुए थे। जिन्होंने अस्ट्रिया की सेनाओं का सामना किया और स्विटजरलैण्ड को स्वतंत्र बनाया। इन बहादुरों में टेल का नाम सर्वोपर है। लूसर्न से यात्री स्टीमर या रेल द्वारा टेल और आलटडार्फ का स्मारक देखने जाते हैं। कहा जाता है कि यहाँ टेल ने अपने पुत्र के सर से नाशपाती का निशाना लगाया था। लूसर्न के वीर का हाल टेल की कहानी के बाद दिया गया है।

स्विजरलैंड के वीर पुरुष पो

लूसर्न की झील का नाम केवल स्विट्जरलैन्ड की सुन्दरताओं में ही नहीं है वरन् इसका नाम इतिहास में और भी बढ़ चढ़कर है। इसके किनारे पर वे भाग (फारेस्ट कैन्टन्स) हैं जिन्होंने प्रजातंत्र राज्य का आरम्भ देखा।



६ मां वर्ष पहले स्विस लोग आस्ट्रिया के राजा के आधीन थे। इनके साथ इनका राजा इतना कड़ा बर्ताव करता था कि यह लोग मजबूर हो गए और तै किया कि बैरियों का जुवां अवश्य उतार कर फेंक दें। कहा जाता है कि विलियम टेल उन पहले व्यक्तियों में से है जिन्होंने पहले पहल स्वतंत्रता की लड़ाई छेड़ी।

प्रत्येक स्विस बच्चा विलियम टेल की कहानी भली भांति जानता है। यह स्विस लोगों का बड़ा वीर है। जेसलर आस्ट्रियन गवरनर बड़ा ही निर्दई, बदमाश और अत्याचारी था। एक दिन उसने आल्टडार्फ नगर के बाजार में एक लट्ठा गाड़ कर अपनी हैट टाँग दी। उसने यह आज्ञा निकाली कि प्रत्येक स्विस को हैट के सामने श्रद्धा पूर्वक झुकना होगा।

टेल उसी राह से निकला किन्तु सर नहीं झुकाया। और शान के साथ निर्भयता पूर्वक आज्ञा का उल्लंघन करता निकल गया। उसने ऐसे अशिष्ट आज्ञा की कुछ भी परवाह न की। जेसलर के क्रोध का पारावार न रहा और उसने टेल को पकड़वा कर बंधवा लिया।

देश दर्शन

जेसलर को मालूम था कि टेल निपुण धनुर्धारी है। कहा जाता है कि टेल का कभी निशाना खाली नहीं गया। जेसलर ने टेल के लड़के को पकड़वा कर एक पेड़ पर बंधवा दिया। एक नाशपाती सर पर रख दी गई और टेल को आज्ञा दी गई कि वह नाशपाती पर निशाना लगावे। यदि निशाना लगाने से इन्कार करे तो उसे फौरन मृत्यु दण्ड दिया जाय।

जब टेल ने यह आज्ञा सुनी तो विस्मय सागर में डूब गया। पुत्र प्रेम ने उसे आ घेरा। अंत में उसने दो बाण निकाले। एक को प्रत्यन्चा पर चढ़ा कर निशाना लगाया। ईश्वर कृपा से निशाना सच्चा उतरा और नाशपाती के दो फांक हो गए। इस प्रकार टेल और उसके पुत्र की जान बची। तब जेसलर ने पूछा कि दो बाण क्यों निकाले थे। पहले तो टेल ने उत्तर देने से इन्कार किया किन्तु जब उसे विश्वास दिलाया गया कि वह चाहे जो कहे। उसे प्राणों की माफी मिलेगी। तो टेल ने उत्तर दिया "यदि पहला बाण मेरे पुत्र को घायल करता, तो दूसरा तेरे दिल को भेदता"।

जेसलर इस वीरोचित उत्तर को सुन कर आग

बबूला हो गया और कहा कि "मैंने तो तुम्हें जीवन दान दिया किन्तु तुम्हें अपना जीवन कारागार में बिताना पड़ेगा, जहाँ तुम प्रकाश न देख सको।"

आज्ञानुसार टेल को गवर्नर की बोट में बैठाकर लोग ले चले जब बोट झील के मध्यवर्ती भाग में पहुंची तो एक बड़ा भारी तूफान आ गया। इसका प्रकोप इतना भारी था कि मल्लाहों का साहस जाता रहा। मल्लाह जानते थे कि टेल उन सब से बढ़कर चतुर मल्लाह था। इसलिये सबों ने मिलकर गवर्नर से प्रार्थना की कि टेल को बोट खेने की आज्ञा दी जाय। जीवन मरण का प्रश्न था। गवर्नर ने आज्ञा दे दी। टेल के बंधन काट दिये गये। उसने बड़ी चतुरता से डाँड़ चलाये और बोट किनारे लगा। वह नाव को एक ऐसे स्थान की ओर ले गया जहां एक चट्टान द्वारा स्वाभाविक उतरने का घाट था। यहाँ उसने नाव को घाट पर लगाया। यह घाट अब तक टेल्सपैलेस के नाम से प्रसिद्ध है।

बोट चट्टान से टकरा कर चकना चूर हो गई। टेल अपने धनुष बाण लेकर कूद पड़ा और नौ दो

ग्यारह हो गया। किन्तु टेल ने सोचा कि जब तक जेसलर जीवित है तब तक उसकी खैर नहीं। इसलिये उसने झाड़ियों के बीच होकर मार्ग पकड़ा। वह एक नाले द्वारा उस रास्ते पर पहुंचा जिधर से गवर्नर अपने किले को जाने वाला था।

यहाँ झाड़ियों के बीच में बैठा टेल प्रतीक्षा कर रहा था। अंत में उसे घोड़ों की टाप सुनाई दी। वह चौकन्ना हुआ। गवरनर का घोड़ा तेज़ी से सामने से निकला। यहाँ टेल ने भी बाण छोड़ा। निशाना सच्चा था, गवर्नर के हृदय में बाण लगा। गवरनर को भली भांत मालूम था कि यह किसका बाण था? उसके मुख से यह शब्द निकले हैं "यह टेल का बाण है" और वह सदैव के लिये पृथ्वी पर सो गया। इस प्रकार स्विस स्वतंत्रता का आरम्भ हुआ।



स्विज़र लैण्ड की प्रसिद्ध लड़ाइयां

बहुत से लोग विलियम टेल की कहानी का विश्वास नहीं करते। किन्तु कोई भी व्यक्ति स्विस लोगों की गौरवपूर्ण विजय का अविश्वास नहीं कर सकता। यह विजय १५ नवम्बर सन् १३१५ ई० में मारगार्टन के क्षेत्र में हुई। झील के किनारे के तीन कैन्टन स्ववेज़, यूरी और अन्टर वाल्डन आस्ट्रिया राज्य से स्वतंत्र होने के लिये तय्यार हो गए। आस्ट्रिया ने भी इनको दबाने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

आस्ट्रिया के डयूक ने इसको सरल समझा था।

इसके पास एक बड़ी सवार और पैदल सेना हथियारों सहित सुसंगठित थी। उधर मुट्ठी भर गरीब किसान थे। यह लोग पहाड़ियों पर रहते थे किन्तु स्वतंत्रता की वेदी पर बलिदान होने को तय्यार थे। आस्ट्रिया वालों ने सोचा कि चलो एक अच्छा पर्यटन होगा। वे बैल-गाड़ियाँ रस्सियों सहित लेकर गए कि उनको उसी से पकड़ लावेंगे।

जब जंगली मनुष्यों ने सुना कि उन पर आक्रमण होने वाला है वे लोग इकट्ठा हुए और १३०० नौ

जवानों को तय्यार किया जिनके पास मामूली हथियार थे। कुछ के पास तो केवल लाठियां थीं जिनके ऊपरी सिरे पर नुकीले लोहे के छड़ गड़े थे। ये लाठियां रात के पहले ही खून से तर हो गईं।

ड्यू क के भाई लियोपोल्ड के अधिकार में २४ हज़ार सेना भेजी गई। सेनाओं की मुठभेड़ मारगार्टन के ढालों पर हुई। इस स्थान पर एक पतला मार्ग ऊपर को जाता है। इस मार्ग के एक ओर पहाड़ और दूसरी ओर गहरी झील है। इस रास्ते के ऊपर स्विस लोगों का छोटा जथ्था खड़ा, बैरियों की राह देख रहा था। आस्ट्रिया वाले अपनी जीत निश्चित समझ लिये थे वे इसलिये ऊपर चढ़े।

जैसे ही यह लोग ऊपर चढ़े वैसे ही इनके ऊपर बरफ का करारा स्विस लोगों ने ढकेल दिया। बड़े बड़े पत्थर, चट्टानें और पेड़ों के तने मार्ग के ऊपर किनारों पर इकट्ठे किये गये थे। जब आस्ट्रियन नीचे दिखाई पड़े तो ये चीज़े ऊपर से ढकेल दी गईं। ये वस्तुएं चकनाचूर करती बड़ी गरज के साथ आगिरीं।

बहुत सेना तो जहां की तहां दब कर रह गई और शेष में भय के मारे खलबली मच गई ।

इस समय अच्छा अवसर समझ स्विस लोगों ने इन पर धावा बोल दिया और फरसों, तलवारों और भालों से उनका काम तमाम कर दिया ।

आस्ट्रियन सेना ने भाग कर अपना प्राण बचाना चाहा किन्तु सब बेकार हुआ । बहुत से लोग तो घोड़ों से कूद कर अपनी जान के लिये भागे किन्तु चट्टानों के बीच वे चतुर पहाड़ी लोगों से बचकर कहां जा सकते थे ।

यह मुशकिल से लड़ाई कही जा सकती है । सच-मुच तो यह एक प्रकार का हत्याकाण्ड था । अधिक संख्या में लोग जहां के तहां मार डाले गये । बहुत से भगाए गए और झील में डुबा दिये गये । शेष लोग छिप छिपा कर भाग निकले ।

भागने वालों में डियूक लिओपोल्ड भी था जिसने स्वयं अपने प्राण किसी तरह बचाये । जिसने उसे भागते देखा था वह कहता है कि "उसकी सूरत एक निराश मृत्यु की भांति थी" । इस क्षेत्र के आस्ट्रिया के सभी

अच्छे सभी बहादुर खेत रहे किन्तु स्विस लोग केवल चौदह ही मारे गए।

स्विस सैनिकों को विश्वास न था कि उन्हें महान विजय प्राप्त हुई है। किन्तु जब उन्होंने बचे खुचे आस्ट्रियन सैनिकों का भागना देखा तो उन्हें विश्वास हुआ कि उनकी जीत हो गई। वे लोग घुटनों के बल बैठ गए। और परमपिता परमात्मा को अपने विजय के लिये धन्यवाद दिया। उस दिन से आज तक उस स्थान पर वार्षिक धन्यवाद (थैन्क्स गिविंग) देने का दिन मनाया जाता है। प्रति वर्ष स्विस लोग इस स्थान पर आते हैं भक्ति और श्रद्धा पूर्वक सिर नवाते हैं। यह दुनिया की बड़ी लड़ाइयों में से है। यह मारगार्टन कैन्टन को स्वतंत्रता की आखिरी लड़ाई थी तब से कभी भी उन्हें बैरियों से नहीं लड़ना पड़ा।

लूसर्न का एक वीर बालक

मारगार्टन के स्वतंत्र होने के पश्चात् लूसर्न के भी अपनी स्वतंत्रता के फेर में पड़े। अंत में यह लोग

अपने पड़ोसियों के साथ मिल गए। इस प्रकार झील के तट का चौथा स्वतंत्र लूसर्न का कैन्टन बना।

जब आस्ट्रिया को यह बात ज्ञात हुई तो उसके क्रोध का पारावार न रहा। शीघ्र ही वह इसको फिर लेने की तरकीब सोचने लगा। और वहाँ के कलेक्टर बोलिफ़-रूथेन बोर्ग के अधिकार में सेना भेजी गई।

पाँच सौ वर्ष हुए एक रात गर्मी के दिनों में पीटर नामक बालक झील में स्नान करने गया। स्नान के पश्चात् उसने कपड़े पहने और घाट पर लेट कर सो गया। इतने में उसकी नींद घोड़ों की टाप से खुल गई। उसने देखा कि पाँच या छः घुड़सवार धीरे धीरे तट की ओर आ रहे हैं।

बालक को इन लोगों की डाकुओं की सी चाल नहीं जँची। उसने पक्का संकल्प कर लिया कि वह इनके पीछे लगेगा और नगर के चौकीदारों से इनका हाल कहेगा। वह उठने ही को था कि दूसरा जत्था आया और चला गया। इनके अगुवा बोलफ़ रूथेन बोर्ग को बालक ने पहचान लिया। बालक जानता था कि

यह मनुष्य लूसर्न का बैरी है। जैसे ही वे पास से काना फूसी करते निकले, बालक ने उनकी कुछ बातें सुन लीं जो उसके लिये काफ़ी थीं। उसने समझ लिया कि उसके नगर पर बला आने वाली है।

जब वेलिफ और उसके साथी निकल गए। पीटर उछल पड़ा और उनके पीछे हो लिया। वह पत्थरों और घासों के बीच छिपता छिपता उनका पीछा कर रहा था। शीघ्र ही वे सब नगर के समीप पहुँच गए। अब उनके और नगर के बीच केवल कुछ सिवार और बालू की एक पट्टी थी। किन्तु पीटर को यह ज्ञात हुआ कि वह जिनका पीछा कर रहा था उनका पता नहीं है। वे ग़ायब थे। बालक ने सोचा कि क्या वे पृथ्वी में समा गए या किसी छिपे मार्ग से वे नगर के भीतर निकल गये।

उसने इधर उधर देखा, सुना किन्तु सिवा पानी के लहरों के शब्द के सिवा कुछ न था। तब एकबारगी उसने कुछ दूर पर झिलमिलाती रोशनी देखी। वह बालू के ऊपर रेंगता हुआ एक खोह के मुख पर पहुँच गया यह एक सुरंग के भांति थी जो अँधेरी पहाड़ के नीचे

जाती प्रतीत होती थी। बालक ने तुरंत इस स्थान को पहचान लिया। यह सुरंग नगर को जाती थी। इसके दूसरे सिरे पर एक छोटा कमरा था। इसके छत पर एक दर्वाज़ा था जहां से सीढ़ी लगी हुई थी। इस दर्वाज़े से रास्ता एक स्तबल में जाता था और फिर अस्तबल से रास्ता नगर के मध्य को जाता था। यह पथ बैरियों के लिये बड़ा ही उपयोगी था। यह द्वार एक विश्वासघाती ने बैरियों को खोल रक्खा था। यह पहले स्विस लोगों के बीच एक विश्वास पात्र व्यक्ति था। इस समय यह लोग बैरियों के साथ था। इस राजद्रोही का नाम जीन डी माल्टर्स था।

पीटर खोह के भीतर घुसा और उसने जीन डी माल्टर्स की बातें करते सुना। यह बैरियों को समझा रहा था। पीटर धीरे धीरे उनके समीप उनका भेद जानने के लिये गया उसे मालूम हो गया कि दूसरे दिन सबेरे हो लूसरीन में हत्याकाण्ड होगा। इसलिये उसने अपने पिता और साथियों को ख़बर देने की सोची।

एक बारगी उसका जी दहलने लगा। उसने अपने पीछे किसी को देखा। उसने भागना चाहा किन्तु

यह व्यर्थ था। लोगों ने उसे देख लिया। एक मज़बूत व्यक्ति ने उसे पकड़ कर उजाले के समीप जत्थे के बीच लाकर खड़ा किया।

पकड़ने वाले ने चिल्ला कर कहा "जासूस, जासूस" सभी सैनिकों के हाथ तलवारों पर गए किन्तु जब उन्होंने देखा कि वह तो केवल एक बालक था तो रुक गए। किन्तु जीन माल्टर्स के क्रोध की अग्नि जल उठी।

उसने चिल्ला कर कहा, "तुम यहां कैसे आए"। पीटर ने उत्तर दिया कि वह तट पर सोता था, उन लोगों ने उसे जगाया और वह उनके पीछे पीछे यहाँ तक चला आया।

राजद्रोही ने कहा कि उसे उसकी बात का विश्वास नहीं है। उसे किसी ने भेजा है। किन्तु पीटर ने उत्तर दिया कि उसे किसी ने नहीं भेजा और उसने सच्चा सच्चा हाल कह दिया है।

किन्तु फिर भी राजद्रोही ने न माना और दबाकर धमकियां देकर पूछने लगा कि उसे किसने भेद के लिये भेजा है। फिर उसने कहा अच्छा दो मिनट दिये जाते हैं। तुम जवाब दो नहीं तो तुम्हारी जान जावेगी।



दो मिनट बीत गये किन्तु वीर बालक ने कुछ उत्तर न दिया। उसने अपने पिता, माता और नगर वासियों को खतरे में देखा। किन्तु वह चुप था। मालटर्स ने कहा बस इसे मार डालना चाहिये। किन्तु इसी समय उनमें से किसी ने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई।

"उन्होंने कहा नहीं, नहीं बालक निरपराध होता है।" इसकी हत्या से हमें कोई लाभ न होगा। और हमें अपने कार्य का आरम्भ ऐसी हत्या से न करना चाहिये। इसको सौगन्ध दे दो कि जो कुछ इसने देखा या सुना है किसी से न कहेगा और इसे छोड़ दो।

अन्त में पीटर से सौगन्ध ली गई कि उसने जो कुछ उस रात को देखा या सुना है किसी से न कहेगा।

छूटते ही पीटर हवा हो गया। वह उस कमरे में आया जहाँ उसके पिता और दूसरे नागरिक नगर के बारे में परामर्श कर रहे थे। द्वार पर वह खड़ा हो गया और सोचने लगा। कि कुछ करना आवश्यक है नहीं तो रात को आक्रमण होगा और सभी सोते समय मारे जावेंगे। आधी रात आक्रमण का समय निर्धारित था।

अचानक उसके ध्यान में एक बात आई वह सीधा

"चीना भट्टी" के पास कमरे के बीच में गया और कहा "ओ भट्टी" मैंने आज भयानक बातें देखी व सुनी हैं जिसे मैं किसी जीवधारी से नहीं कह सकता किन्तु तुझसे अवश्य कहूँगा"

कमरे के लोगों ने उसे उस भट्टी के पास जाते देख-बड़े अचम्भित हुए। उनको और अधिक विस्मय हुआ जब उन्होंने उसे भट्टी से बातें करते सुना। उन लोगों ने समझा कि बालक पागल हो गया है। किन्तु जब उन्होंने सब कुछ सुन लिया तो उनको सच्ची बात समझ में आ गई। और वे लोग शीघ्र ही हथियार बन्द होने के लिये चल दिये।

आधी रात को आस्ट्रियन सेना ने धावा मारा। किन्तु उन्हे सोते (गुफा) की जगह हथियार बन्द सेना प्रतीक्षा करती मिली। घमासान युद्ध हुआ और देश भक्तों की जीत हुई। उस दिन से लूसर्न को पराधीनता से सदा को छुट्टी मिली। और एक बालक ने उसे बर्बाद होने से बचाया।

———



सालथोर के नागरिक तथा विंकेल रोड का आरनल्ड

जङ्गली कैन्टन के स्वतंत्र हो जाने के पश्चात् भी स्विस और आस्ट्रियन के बीच लड़ाइयां होती रहीं। आस्ट्रिया को यह बात कभी नहीं भूली जिस प्रकार उसको लज्जा उठानी पड़ी थी। और सदैव वह कैन्टन्स या नगरों पर आक्रमण करने के लिये तैयार रहा।

निम्न लिखित कहानी से पता चलता है कि स्विस लोग कितने दयाशील और अच्छी आत्मा वाले होते हैं। ड्यूक लूपोल्ड ने एक बार सालथोर नगर का घेरा डाला। बीच में आर नदी थी। ड्यूक को विश्वास था, कि शीघ्र ही नगर अधिकार में आ जावेगा क्योंकि वहीं के गवर्नर का पुत्र उसके यहां क़ैद था। ड्यूक ने धमकी दी कि यदि नगर वापस न दिया जावेगा तो पुत्र को मार डाला जायगा। किन्तु इसका पिता या पुत्र दोनों के ऊपर कुछ भी प्रभाव न पड़ा।

ड्यूक ने नदी में पुल बांधा और वहां पर बहादुर

सैनिक रखवाली के लिये कर दिये कि भोजन सामग्री न जाने पावे उसका विचार था कि वह भोजन सामग्री बन्द करके क़िले के निवासियों को भूखों मार डालेगा।

यह पुल अधिक मज़बूत न था। एक दिन जब कि सैनिक अधिक संख्या में पुल पर थे। तो पुल नदी में बह गया और सभी सैनिक नदी में डूबने लगे। किन्तु इस समय साल्पोर निवासी अपने वैरियों की ऐसी दशा देखकर प्रसन्न नहीं हुए उनकी सहायता को तत्पर हो गए। शीघ्र ही यह लोग नदी में कूद कूद कर उन सब सैनिकों को बचाया और नगर में लाकर उन्हें सुन्दर भोजन और वस्त्र दिये और फिर उनको उनके ठिकाने को वापस कर दिया।

ड्यूक पर इस सुन्दर और उच्च कार्य का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा और वह नगर के द्वार तक आया। उसके साथ केवल ३० बहादुर सैनिक थे। ड्यूक ने मित्र की भांति नगर में प्रवेश करने की आज्ञा मांगी। उसे आज्ञा मिल गई। उसने एक झंडा नगर को दिया और संधि करली। इस प्रकार साल्पोर का झगड़ा मिटा।

दूसरा १३८६ का सेम पाच का प्रसिद्ध युद्ध है।

जहां विन्कर फील्ड के आरनोल्ड ने सदैव के लिये अपना नाम स्विज़र लैन्ड के अन्दर जीवित कर लिया। ड्यूक ने एक बार फिर स्विस को भयभीत करने के लिये ज़ूरिच पर धावा मारा। उसके साथ एक बड़ी सेना थी एक छोटी सी सेना स्विस लोगों की इसके मुक़ाबले को आगे बढ़ा। सेमपाच के स्थान पर दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई।

युद्ध के दिन आस्ट्रियन घुड़ सवारों ने अपने घोड़े पीछे छोड़ दिये। कदाचित उन्हें मारगार्टन की युद्ध याद आई और उन्होंने पैदल लड़ना अधिक उपयोगी समझा। किन्तु भारी जूतों के होने के कारण उनकी दशा बुरी हो गई। इसलिये नोक पिडोज़ के स्थान पर अपने जूतों को काट कर वे युद्ध के लिये आगे बढ़े।

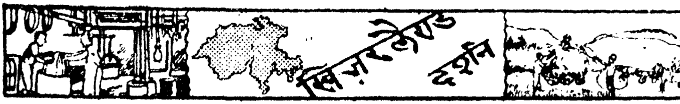
कंधे से कंधा जुटाए वे आगे बढ़े और बड़े ज़ोरों के साथ स्विस सेना पर टूट पड़े उनके भाले बल्लम आगे की ओर निकले हुये थे। पहले बहादुर पहाड़ी लोगों की बुरी दशा रही और ६० सैनिक खेत रहे। आस्ट्रियन कोई भी घायल नहीं हुआ था। मुख्य कारण यह

था कि अगली क़तार जो भालों और बल्लमों की थी उसे वे तोड़ न सके।

इस अगली क़तार को बिना तोड़े अन्दर घुसना अनिवार्य था और स्विस बुरी तरह भाग रहे थे।

ऐसी बुरी दशा में आरनाल्ड आगे आया और कहाः—"तुम लोग मेरे बाल बच्चों को रक्षा करना, मैं तुम्हारे लिये मार्ग बनाता हूँ। यह कह कर वह दोनों हाथ फैलाए आगे कूद पड़ा। उसने सारे भालों को पकड़ कर अपने सीने के सामने कर लिया। इस प्रकार एक पतला मार्ग बन गया। इस मार्ग पर वे चतुर फुर्तीले स्विस कूद पड़े।

शीघ्र ही मार्ग अधिक चौड़ा हो गया। ज़ोरों से तलवारों और भालों की वर्षा हुई। परिणाम यह हुआ कि आस्ट्रियन सेना गिरने लगी और बुरी तरह संहार हुआ। ड्यूक लियोपोल्ड अगली कतार में लड़ता मारा गया। इस प्रकार स्विस लोगों ने एक और बड़ी लड़ाई जीती। किन्तु उनका बहादुर सूरमा "स्वतंत्रता के लिये मार्ग बनाओ, स्वतन्त्रता के लिये मार्ग बनाओ" चिल्लाता हुआ स्वर्ग धाम सिधारा।



पहाड़ से खिसकने वाला हिमागार

स्विस आल्प्स के ऊपर का जीवन जाड़े में बड़ा संकट मय होता है यहां पर इन दिनों हिम की ज़ोरों की वर्षा होती है और बरफ के तूफ़ान व आंधियां आती हैं। जिनके नीचे यहां के निवासी बहुधा दबकर अपने प्राण खो देते हैं। किन्तु सब से बड़ा संकटमय वस्तु यहाँ के बरफ से बड़े बड़े करारे व ढेर हैं जो पहाड़ों के ऊपर से नीचे को खिसकते रहते हैं। यह बरफ के तूदे बहुत बड़े २ होते हैं।

कभी २ यह ढेर किसी सुनसान या खाली घाटी में गिरते हैं और वहां पर पड़े रहते हैं। बसन्त ऋतु में सूर्य की किरणें इसको पिघलाती हैं। किन्तु कभी २ ये तूदे पहाड़ी मार्गों या बसे हुए ढालों के ऊपर फिसलते हैं। ऐसी दशा में कभी तो कोई यात्री दब जाता है और कभी २ गांव का गांव बर्बाद हो जाता है।

प्रत्येक जाड़े के मौसिम में इनकी दशा अलग २ होती है। उस साल जब पहले बरफ कम गिरती है और बाद में अधिक गिरती है उस साल तो और भी अधिक

इनमें भिन्नता होती है। कारण यह है कि ऊपरी भागों में यदि बरफ कम पड़ी तो वह दिन में सूर्य की गरमी से पिघल जाती है और पाला पड़ता है इस प्रकार बरफ की एक कुल्लई ऊपरी पहाड़ी भाग में हो जाती है।

जब बरफ ज़ोरों से गिरने लगती है। और ५ या ६ फ़ीट मोटी हो जाती है। यह नई बरफ पुरानी के ऊपर चिपट नहीं सकती। इसलिये स्वयं अपने बोझ के कारण ही फिसल पड़ती है। यह बड़ी बड़ी चट्टानों में टूट जाती है। यह बड़ी शक्ति और तेज़ी के साथ नीचे फिसलती है और जो कुछ भी सामने आता है उसे बहा ले जाती है।

ये बर्फीले ढेर एक प्रकार के नहीं होते। यहां के निवासी इनको कई भागों में विभाजित कर देते हैं। इनमें से एक धूल वाले करारे हैं। यह बड़ा ही भयानक होता है। जब प्रचंड वायु पहाड़ पर चलती है तो ताज़ी बरफ चट्टानों और टुकड़ों में विभाजित हो जाती है। यह आंधी इन टुकड़ों को लेकर चलती है और पेड़ों, जानवरों आदि को कुचलती उड़ाती बड़े वेग से चलती



हैं। जब यह शांत हो जाती है तो बरफ के छोटे टुकड़े जो वस्तुओं के चारों ओर जमा हो जाते हैं देखने में संगमरमर की भांति दिखाई देते हैं।

एक मनुष्य जो कि ऐसे तूफ़ान में फंसा था किन्तु जीवित बच गया उसकी कहानी नीचे दी जाती है। वह अपने मार्ग पर जा रहा था। तूफान शांत होने के समीप ही था कि यह उसके सामने पड़ गया। बस फिर क्या था बरफ के टुकड़े ने इसे उठाकर बरफ की एक पट्टी पर ला खड़ा किया पहले इसके पैर बरफ से जकड़ गए। फिर ऊपरी भाग हाथ इत्यादि भी दब गए किन्तु ईश्वर की कृपा से नाक ढकते ढकते तूफान शांत हो गया। उसने अपनी जीवन आशा छोड़ दी थी। जैसे वह बेहोश होने को था वैसे ही उसने लोगों को अपने बचाने के लिए आते देखा इसे फिर नई शक्ति आ गई। वे लोग इसके गले से बरफ हटा, सांस लेने का द्वार भली भांति कर दूसरे जिन्दा गड़े हुए व्यक्ति को निकालने चले गए बाद में आकर इसे खोद कर बाहर किया।

स्ट्रोक ग्लेशियर इनमें मुख्य है। जब बरफ के

पहाड़ ढीले पड़ जाते हैं तो फिसल पड़ते हैं इस प्रकार इसकी उत्पत्ति होती है। जो कुछ भी राह में आता जाता है उसे यह समेटता चलता है। जंगल में पेड़ों को तोड़ता समेटता सड़कों पर आता है और यह उनके खम्भों को लपेटता हुआ गांव में पहुँचता है। सारे गांव को विध्वंश करने के पश्चात् किसी घाटी में जाकर फैल जाता है या समतल भूमि पाकर बरफीली लहरों में बदल जाता है।

ग्राउन्ड अवलन्चेड—यह वह बर्फीले ढेर हैं जो अपने साथ मिट्टी, पत्थर, पेड़ घसीटते चलते हैं और उससे उनका रंग मटमैला हो जाता है।

ये फिसलने वाले ग्लेशियर बर्फीले तूफ़ान से कम खतर नाक होते हैं। क्योंकि इनकी चाल कहीं धीमी होती है। और मनुष्य इनके गिरने के शब्द सुनकर होशियार हो जाते हैं और भाग कर यदि अपना माल नहीं तो कम से कम जीव तो अवश्य ही बचा लेते हैं।

एक बार ऐसे कुछ व्यक्ति एक ढाल पर खड़े थे उन्होंने एक ग्लेशियर ठीक गांव के सामने से फिसलते देखा वे शीघ्र ही भाग कर चर्च के अंदर आए और

घंटा बजाया। गांव वाले बाहर आए तो ग्लेशियर की आवाज़ पाई। वे लोग घरों से बाहर अपनी जानें लेकर भागे। ग्लेशियर नीचे गांव में आया, चर्च की मज़बूत दीवारों से टक्कर खाया और उसे चकनाचूर कर दिया किन्तु इस मुठभेड़ में उसका ज़ोर कम हो गया और वह गांव के अन्दर जाकर शांत हो गया।

इस गांव के कुछ घर तो हिल डुल कर कट गए थे और बाक़ी बिलकुल बरफ से ढक गए थे। गांव वालों ने जब अपनी गणना की तो उन्हें मालूम हुआ कि चार व्यक्तियों की कमी है। तीन स्त्रियां और एक अस्सी वर्ष का बूढ़ा। इनमें से एक तो अपनी हिलती हुई भट्टी के पीछे मिली। दूसरी जीवित बरफ से ढकी स्तबल से निकाली गई। तीसरी भाग कर एक घुड़साल में गई थी वहां से खोद कर निकाली गई। चौथा, बुड्ढा अपने बिस्तर पर पड़ा सो रहा था। उसके ऊपर छत पर बड़ी ऊँची बरफ की तह पड़ी थी। उसे बड़ा अचम्भा था कि आज रात कितनी बड़ी हो गई। वह बड़े चक्कर में पड़ गया जब लोग उसके कमरे में एक खिड़की द्वारा

प्रवेश किए उसे अपनी खोदी हुई बरफ की सुरंग बाहर लाए।

किन्तु सभी गाँव ऐसे भाग्यशाली नहीं होते। कभी यह रात को आते हैं कभी बिना आवाज़ ही फिसल पड़ते हैं और महीने बाद जब बरफ पिघलती है तो मुर्दे बाहर निकाले जाते हैं।

इन बड़े २ ग्लेशियरों के सिवा एक छोटी जात का भी होता है। जहां कहीं सीधी ढाल होती है। वहां बरफ फिसल पड़ता है यह बर्फीली फिसल (स्नोसिलिप) कहलाता है। यह बरफ का एक छोटा टुकड़ा होता है। ऊपर से यह लुढ़क पड़ता है और फिर पंखे की भांति फैल जाता है। ऐसे ही लुढ़कता धीरे धीरे नीचे चला आता है। यह भी कम भयानक नहीं है क्योंकि यदि इसे मार्ग में कोई व्यक्ति मिल जाता है तो उसे भी यह लुढ़का लेता है। यदि उसने होशियारी से अपने को पृथ्वी से ऊपर न रक्खा तो उसे मार ही कर छोड़ता है। बर्फीली फिसल के लिये इतने कम बरफ की आवश्यकता होती है कि एक कहावत है कि "एक कड़ाही बरफ एक मनुष्य को मार सकती है।



जब कभी कोई कड़ा ग्लेशियर रुक जाता है तो वह बड़ा सख्त हो जाता है। कभी कभी सड़क ५० या ६० फीट नीचे दब जाती है। तो रास्ता चालू करने के लिये कुदालों और फावड़े से सुरंग खोदनी पड़ती है। बरफ की छत और दीवालें इतनी मज़बूत रहती हैं कि गिरने का भय बहुत कम रहता है।

यह रास्ता एक बर्फीले मार्ग की भांति बनाना पड़ता है। बरफ बड़ी कड़ी हो जाती है। उसके ऊपर चोट करने से उसी भांति के चिन्ह बन जाते हैं जैसे संगमरमर पर रुखानी चलाने से होते हैं। यह कार्य्य बड़ा ही कठिन होता है क्योंकि केवल बरफ ही काटनी रहती है। इस बड़े बर्फीले पहाड़ के अन्दर बड़े बड़े पेड़ के तने होते हैं जिनहें चीरना और काटना पड़ता है। बरफ के बड़े २ ढेर काटने पड़ते हैं और पत्थर के कड़े रोड़े हटाने पड़ते हैं।

ऐसे मनुष्यों की बहुत सी कहानियाँ हैं जो बरफ के अन्दर गड़े हुए जीवित खोद कर निकाले गए। एक नौयुवक एक पहाड़ी सड़क द्वारा जा रहा था। उसने ऊपर देखा तो एक बर्फीली चट्टान फिसल रही थी। वह

एक बड़ा पत्थर की शिला के नीचे बैठ गया। एक पेड़ उस चट्टान पर गिरा पड़ा था। तूफान आया और उसे जीवित गाड़ दिया। उस युवक के साथी उसे ढूंढ़ने निकले और अन्त में दैव योग से उसे उस चट्टान के नीचे से खोद निकाला. वह १०३ घंटे नीचे दबा था वह हिल डुल न था बोल नहीं सकता था फिर भी जीवित था।

एक दूसरी अदभुत घटना बरफ द्वारा मृत्यु से बचने की यह है। एक बार एक मनुष्य अपने गांव से काफी दूर पर था। यह स्नोसिलिप के चंगुल में फंस गया। वह खोद कर निकाला गया। सभी को विश्वास था कि वह मर गया है। उसका मृतक शरीर एक ओर अर्थी संस्कार के लिये रख दिया गया। कुछ समय बाद उसके गाँव का एक मनुष्य वहाँ आया। लोगों ने उससे उस मृतक शरीर को उसके गाँव ले जाने को कहा।

यह मनुष्य एक अशिष्ट गँवार था उसने उस मृतक को अपनी गाड़ी पर नहीं वरन् गाड़ी के पिछ-वाड़े रक्खा। उसके घुटनों को रस्सी में बांध कर अपनी गाड़ी में बाँध दिया और घसीटता हुआ चला। यह मृतक शरीर बरफ़ के ऊपर घसिटता जा रहा था।



मार्ग में रात हो गई इस लिये यात्री ने अपना डेरा एक सराय में डाला। जब वह मृतक शरीर को खोलने के लिये गया कि उसे दूर हटाकर स्तबल में रख दे। तो उसने आश्चर्य पूर्वक देखा कि मृतक शरीर हिल डुल रहा है। शीघ्र ही खोलकर वह गरम कमरे में पहुँचाया गया और उसे   आ गया। बाद को वह बहुत समय तक जीवित रहा। अगर उसका गाड़ीवान साथी गँवार न होता तो वह कभी न जीता। उसी गंवाँगाना ढङ्ग से घसीटने के कारण उसके बदन में गर्मी आ गई और खून फिर से दौरा करने लगा।

एक दूसरी कहानी जिसको प्रत्येक यात्री वहां जाकर सुनता है। वह यह है। एक बार एक मां अपने बच्चों के साथ एक पहाड़ी झोपड़े में बरफ से दब गई उसकी छत पर बहुत ऊँची बरफ पड़ी थी। उन्होंने बाहर निकलने को भरसक कोशिश की किन्तु बेकार हुई, जब घर की भोजन सामग्री समाप्त हो गई तो मारे भूखों के वे मरने लगे। अंत में मां ने तय किया कि उन सब के जीवित रहने के लिये उनमें से एक का मरना अच्छा है।

वह अपने बच्चों को लेकर प्रार्थना करने बैठा। उस समय चिट्ठी निकाली गई कि कौन मारा जाय। चिट्ठी अभागी छोटी लड़की के नाम निकला। बहादुर छोटी लड़की घुटनों के बल बैठ गई और मरने पर अपनी राय ज़ाहिर किया। उसी समय एक बड़ी आवाज़ चिमनी में हुई और एक पहाड़ी मृग आकर आगे गिरा। उनकी जान भूकों मरने से बची और वे उसी रास्ते से जिससे वह मृग आया था, चढ़कर बाहर निकल गए।

एक प्रकार का और भय यहां पर यह होता है कि ग्लैशियर के आगे आगे एक वायु का प्रचंड झोका चलता है। यदि कोई उसके सामने पड़ गया तो वह उसे उठाकर फेंक देता है एक दिन एक स्त्री चर्च को जारही थी। उसी समय यह झोंका आया और स्त्री को उठाकर पेड़ के ऊपरी डालों में लेजाकर फेंक दिया। वह डालियों को पकड़े लटकी रही। जब उसके साथी चर्च से वापस आये तो उसकी दशा देख उसे उतारा।

इस प्रकार और भी बहुत सी कहानियाँ हैं।

———



शीतकाल में एक स्विस दर्रे का भ्रमण

बर्फीले मार्ग जो ऊँचे दर्रों में होकर जाते हैं, वह बहुत ही संकरे होते हैं। इनमें छोटी २ बर्फ पर चलने वाली गाड़ियां चलती हैं। इन गाड़ियों को एक्के की भांति घोड़े खींचते हैं। यह गाड़ियां एक खुली संदूक की भांत बनी होती हैं। इसमें कुलाबों पर एक ढक्कन होता है। जो बैठे हुए व्यक्तियों को सीने तक ढके रहता है। मनुश्यों का ऊपरी भाग खुला रहता है। यह गाड़ियां प्रायः उलट जाया करती हैं। ये कुलाबे बड़े सुभीते के होते हैं। बैठे लोग ढक्कन उठाकर सरलता पूर्वक बाहर निकल जाते हैं।

गाड़ीवान गाड़ी के पीछे बढ़े हुए भाग में बैठता है। उसकी लगाम की डोरी बैठे हुए भाग में बैठता है। उसकी लगाम की डोरी बैठे हुये लोगों के कंधों के बीच में रहती है। इन गाड़ियों के पहियों में कोई स्पिरिंग नहीं रहती। इन पर सामान, स्वाब नहीं लादा जाता। यात्रियों के गाड़ी के पीछे एक दूसरी गाड़ी पर सामान लादा रहता है। इसको एक घोड़ा स्वयं खींचता है। इस पर हांकने वाला नहीं होता।

रास्ते पहियों की रगड़ से खराब हो जाते हैं। उसके कारण जब गाड़ियां चलती हैं तो उछल, पुछल के कारण काफी हिचक लगती है। जिससे यात्रियों को बड़ा कष्ट होता है। प्रायः मार्ग में बहुधा उतरना पड़ता है क्योंकि मार्ग गड़बड़ होने के कारण घोड़ा भरी हुई गाड़ी नहीं खींच सकता।

स्विस पहाड़ों पर बहुधा चढ़ते हैं। निचले ढालों पर घूमते हुए मार्ग से जाना बड़ा ही सुहावना लगता है। रास्ते के इधर उधर घास के मैदान, जंगल, वाटिकाएं इत्यादि मिलती हैं। किन्तु बर्फीली रेखा के पास पहुँच कर मुख्य कार्य्य चढ़ने का आरम्भ होता है।

प्रायः पहले पहल ग्लेशियर की ही बरफ पर चढ़ना पड़ता है। ग्लेशियर बरफ की एक प्रकार की नदी है। ऊपरी पहाड़ी भाग में बड़े बरफ के मैदान जम जाते हैं। और बसन्त ऋतु में सूर्य की गर्मी से वे भी नहीं पिघलते बल्कि बरफ के मैदान बन जाते हैं। यह मैदान अपने बोझ के कारण स्वयं ठहर नहीं सकता और पहाड़ से नीचे की ओर धीरे धीरे चलने लगता है

यह ग्लैशियर चलते तो धीरे धीरे हैं किन्तु एक

चाल में चलते हैं। जैसे जैसे यह नीचे आते हैं वैसे वैसे सूर्य और हवा की गर्मी के कारण घुलने लगते हैं। इसमें से तालाब बन जाते हैं। नदियां वह निकलती हैं। किन्तु फिर भी बरफ की चट्टान वैसी की वैसी बनी रहती है। बहुत से ऐसे स्थान देखे गये हैं। जहाँ पर एक ओर तो बर्फीले मैदान हैं और दूसरी ओर घास के मैदान व खेत हैं।

ग्लेशियर का ऊपरी तल बड़ा ही सुहावना होता है किन्तु बड़ा ही खतरनाक भी होता है। इसकी दरारें बड़ी भय की वस्तुएं हैं। यह दरारें भी छोटी बड़ी होती हैं। किसी २ की गहराई बहुत अधिक होती है।

ग्लैशियरों के चलने से यह दरारें पैदा होती हैं। जब बरफ की बड़ी नदी ऊंचे नीचे स्थान पर चलती है तो भयानक फटने की आवाज़ सुनी जा सकती है। कभी २ तो यह आवाज़ बिजली की गरज सी होती है। ग्लेशियरों के चलने से यह दरार और भी बड़ी होती है। यह एक अथाह कुंड की भांति हो जाती है। इस कुंड के इधर उधर की दीवारें खड़ी होती हैं।

यह एक असावधान यात्री के लिये भयानक जाल का कार्य करते हैं।

पाठक गण कह सकते हैं कि कोई भी मनुष्य ऐसे बड़े दरारों में नहीं जा सकता। ठीक है यदि प्रत्येक व्यक्ति यह जान ले कि यहाँ दरार है तो नहीं जा सकता। किन्तु वह देख नहीं सकता। बरफ के तूफान इन दरारों के ऊपर बरफ की तह डाल कर इन्हें छिपा देते हैं। चढ़ने वाला यात्री निर्भीकता के साथ बिना अपनी लाठी को बरफ पर गड़ाये चढ़ता चला जाता है। यह इस दरार के ऊपर पतली बरफ की पट्टी पर धोके से चला जाता है। फिर क्या सर के बल नीचे दरार में पहुँच जाता है।

ऐसी घटनाएं बहुधा देखी गई हैं और लोगों की जानें मुफ्त में गई हैं। कभी २ तो उनके मृतक शरीर जल्द ही मिल गए हैं और कभी २ तो कई सालों के बाद मिले हैं।

एक बार ऐसे ही एक नवीन दम्पति एक स्विस गाव में दाम्पत्य सहवास का प्रथम मास व्यतीत करने आए थे। पति देव पहाड़ पर चढ़ने को निकले और

अभाग्यवश एक दरार में गिर गए। उनकी लाश नहीं मिली। इसपर ग्लैशियर की चाल का हिसाब लगाया गया। वैज्ञानिकों ने बतलाया कि ३० वर्ष के बाद ग्लेशियर लाश को देगा। ३० वर्ष के बाद वह अधेड़ स्त्री अपने पति की लाश की खोज में फिर लौटी। लगभग जो समय बताया गया था उसी समय वह लाश ज्यों की त्यों मिली।

इन दरारों को बगलें देखने में बड़ी सुन्दर मालूम होती हैं। खासकर जब सूर्य की किरणें इस पर पड़ती हैं तो दृश्य बड़ा ही सुहावना होता है। दरारों की दीवार में रंग बिरंगी बरफ चमकती दिखाई पड़ती है जिस पर से दृष्टि हटाने की तबीयत नहीं होती। किन्तु यदि हम अपनी छड़ी द्वारा रंगीन बरफ को तोड़ कर हाथ पर रक्खें तो हमें पता लगेगा कि यह भी वही मामूली सफेद बरफ ही है। इसका कारण केवल इसकी स्थिति होती है।

यदि यह दरारें पानी से भर जावें तो इनका रंग गहरा नीला हो जाता है। कभी २ इन दरारों का ऊपरी भाग बरफ की पतली तह द्वारा ढक जाता है। और

केवल दो एक स्थान पर सूराख रह जाते हैं इन छेदों द्वारा सूर्य का प्रकाश अन्दर जाता है। तो इस खोह का दृश्य बड़ा ही सुन्दर हो जाता है।

पानी की छोटी २ धाराएँ जो ग्लैशियर के ऊपर होती हैं बड़ी हो मनमोहनी होती हैं। अगर हम उनमें से किसी एक के किनारे २ जायँ तो वह अपने सहायकों को पत्तों की नसों की भांति समेटती बड़ी धारा हो जाती है। इस बड़ी धारा का दृश्य अनुपम होता है। इस धारा की तह नीले रंग की होती है। यह शीशे की भांति पारदर्शी और स्वच्छ होती है। इसके दोनों किनारे बरफ के बने होते हैं। जो सूर्य के प्रकाश से स्वेत चमकते हैं। स्वेत और नीले के बीच निर्मल पानी की चमचमाती, उछलती नाचती-कूदती धार बहती है।

थोड़ी दूर चलने पर कुछ राग सी सुनाई देती है। यह एक बड़ा गोला छेद होता है जिसमें हमारी धार समा जाती है। फिर नीचे २ और दूसरी धाराओं को लेकर ग्लेशियर के मुख (अगले भाग) से बाहर निकलती है। इसको ग्लेशियर नदी कहते हैं। इसका पानी मटमैला हो जाता है।



कहां कहां ग्लैशियर के मेज़ दिखाई पड़ते हैं। इन मेज़ों के पाये बरफ के बने होते हैं। कभी २ कड़े पत्थर की चट्टानें ग्लैशियर पर आ गिरती हैं। यह चट्टानें अपने नीचे की बरफ नहीं पिघलने देतीं और चारों ओर की बरफ पिघलती जाती है। अंत में यह बड़ी चट्टान बरफ के एक पाये पर खड़ी होजाती है। इस पाये के कमज़ोर होने और टूटने के पश्चात यह पत्थर की चट्टान एक दूसरी मेज़ नीचे फिर बना लेता है।

ग्लेशियरों के ऊपर केवल पत्थर के मेज़ नहीं होते वरन् कहीं २ बड़े बड़े पत्थर के टुकड़ों और रोड़ों के ढेर लग जाते हैं। जिनको "मोटेनीज़" कहते हैं। जब ग्लैशियर पहाड़ से नीचे उतरता है तो मिट्टी, पत्थर और रोड़ों के ढेर लगाता जाता है। जब बरफ पिघल जाती है तो यह ढेर पड़े रह जाते हैं और बहुधा यह ढेर १००० फीट चौड़े और १०० फीट ऊँचे होते हैं।

इन ग्लेशियरों की चाल या उतार से यह लाभ होता है कि नए २ मैदान पहाड़ों के नीचे बन जाते हैं जहाँ पर नई २ चरागाह व खेत बना लिए जाते हैं।

स्विस पहाड़ों पर चढ़ने वालों को सदैव किसी न

किसी पथ प्रदर्शक की आवश्यकता रहती है। यह पथ प्रदर्शक यात्रियों को ढाढ़स बँधाते, साहस दिलाते, मार्ग की कठिनाइयों को झेल डालते हैं। प्रत्येक यात्री के पास एक बरफ काटने का कुल्हाड़ा रहती है। इसका डंडा ५ या ६ फीट लम्बा होता है। यह कुल्हाड़ी बरफ के ऊपर बरफ काटने व सूराख बनाने के काम आती है। यात्रियों के जूतों में बड़ी २ कीलें रहती हैं। जिससे जूता बरफ की चट्टानों मे फिसल नहीं सकता। इनको सहायता से चढ़ने वाले खराब से खराब मार्गों पर चढ़ जाते हैं और फिसल नहीं सकते।

मार्ग बनाने वाले कंधे पर बोरे रखते हैं। इन बोरों में भोजन सामग्री होती है। चढ़ने वालों के पास रस्सी भी होती है जिसे यह लोग कठिन चढ़ाई के समय अपनी कमरों में बांध लेते हैं।

किसी भी शिखर की चढ़ाई एक दिन में नहीं हो सकती इसलिये बीच में झोपड़ियां होती हैं। इन्हीं झोपड़ियों में आश्रय पाने के सहारे यात्री ऊपर चढ़ते हैं और एक दिन की चढ़ाई के पश्चात् आराम करके दूसरे दिन की चढ़ाई का कार्य्य समाप्त करते हैं।

इन झोपड़ियों के दर्वाज़े सदैव खुले रहते हैं। पथ प्रदर्शक भोजन तय्यार करते हैं। सभी खाते हैं और शीघ्र ही सो जाते हैं। लगभग १२ बजे सवेरे गाइडों का अगुवा उठता है और सभों को जगाता है। उठने पर सभी गरम काफी पीते हैं। पीने के बाद भी झोपड़ी के बाहर निकलते हैं। चलने के पहले सभी अपने २ को रस्सी में बांध लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के बीच १२ फीट रस्सी छूटी रहती है। सब से आगे अगुवा गाइड रहता है उसके बाद यात्री, बीच में फिर एक दूसरा गाइड और फिर सब से पीछे तीसरा गाइड रहता है। सभी लोग अगुवा गाइड के कथनानुसार कार्य्य करते हैं। जब सूर्य्य की ललामी फूटती है तो यह लोग सूर्योदय का दृश्य देखने और धूप का आनन्द लेने के लिये ठहर जाते हैं। मार्ग में कभी २ ऐसे स्थान आ जाते हैं जहां मार्ग बड़ा ही संकरा होता है और मार्ग के दोनों ओर गहरी खाईं और खंदक होती है। ऐसे स्थानों (अरेरे) पर यात्रियों को बड़ी सावधानी से चलना पड़ता है। अगुवा अपनी कुल्हाड़ी से बर्फ़ पर छेद बनाता जाता है और सभी एक २ करके बारी बारी से चलते हैं। जब एक चलता

है तो दूसरा होशियार रस्सी पर बल देने के लिये तैयार रहता है। इस प्रकार यह लोग ऐसे मार्गों को पार करते हैं।

फिर ऐसे स्थान भी यात्रियों को मिलते हैं जहाँ बोलना भी कठिन हो जाता है। ऐसे स्थानों पर पहुंच कर अगुवा अपनी उँगलियों को अपने होठों पर रख लेता है इस चुपचाप रहने वाले संकेत को सभी समझ जाते हैं। यहां सभी को बड़ी सावधानी से काम लेना पड़ता है क्योंकि किन्चित मात्र शब्द का बड़ी २ चट्टानों के फिसलने का कारण हो सकता है। जिससे उन यात्रियों की मृत्यु के सिवा और दूसरा मार्ग नहीं रहता।

इन यात्रियों को बहुधा मार्ग में बरफ़ के पुल भी मिलते हैं जिसको इन्हें पार करना पड़ता है।

स्विस पर्वत की चढ़ाई

यह पुल बड़े ही भयानक और खतरनाक होते हैं। अगुवा पहले इसके ऊपर जाता है। यदि मार्ग ठीक रहा तो सभी बारी २ से चले जाते हैं और यदि कहीं पुल

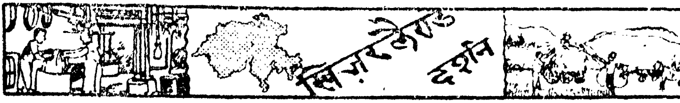
फिसलने लगता है तो अगुवा सावधान करने के लिये चिल्लाता है। दूसरे साथी जो ठोस बरफ पर खड़े रहते हैं मज़बूती के साथ रस्सी पर बल देकर खड़े हो जाते हैं। देखते २ पुल लापता हो जाता है। रस्सी भी कड़ी हो जाती है। यदि रस्सी टूट गई तो फिर गिरने वाले व्यक्ति के जीवन का अंत हो जाता है और यदि न टूटी तो कुछ ही मिनटों बाद टप, टप, खच, खच की आवाज होती है और गिरा हुआ व्यक्ति बरफ़ की खड़ी दीवार पर अपनी कुल्हाड़ी द्वारा खड्ड बनाता। फिर ऊपर वाले साथी उसे ऊपर धीरे धीरे खींच लेते हैं। थोड़ी देर रुकने के बाद यात्री किसी दूसरे सुगम मार्ग होकर पार करते हैं।

कभी यह यात्री ढालू चट्टानों पर जा निकलते हैं जहाँ पर तूफ़ान होता है। ऐसे समय इनको बरफ के ऊपर श्वेत धुवाँ चलता दिखाई पड़ता है। यह लोग बिलकुल तूफ़ान के मध्य में होते हैं। बरफ और हवा इनके सारे शरीर को हिलाती व ठुकराती रहती है। बिजली की चमक व बादल की गरज इनके सामने व अगल बग़ल एक हाथ फासले पर ही होती है किन्तु ये

यात्री अपने मार्ग पर चले हो ज.ते हैं थोड़ी देर में यह तूफ़ान शान्त हो जाता है।

आगे चलकर इन यात्रियों को बरफ की बड़ी दीवालें तीन २ सौ फीट ऊँची मिलता है। इन दीवालों पर यात्री लोग कुल्हाड़ियों से खड्ड खोद २ कर चढ़ते हैं ऊपर जाकर यह यात्री कुछ भाजन करते हैं आर फिर अपनी चढ़ाई का कार्य्य प्रारम्भ कर देते हैं। यहां की हवा कड़ी मोटी हो जाती है जिससे बहुधा यात्रियों की तबीअत खराब हो जाती है। यहां सांस लेना दुर्लभ हो जाता है। जब अंत में यह लोग ऊपर शिषा पर पहुँच जाते हैं झंडे को फहराते हैं और प्रसन्नता पूर्वक गाना गाते हैं। नीचे से टेलिस्कोप द्वारा जब लोग जान जाते हैं कि यात्री लोग चोटी पर पहुँच गए तो उनकी जीत की खुशी में बंदूक दागी जाती हैं।

कुछ समय रुकने के बाद यात्री लोग नीचे उतरने लगते हैं। उतरने में चढ़ने की अपेक्षा केवल चौथाई समय लगता है। दूसरे दिन संध्या होते होते यह लोग झोपड़ी में फिर वापस आ जाते हैं और रात व्यतीत



करके सवेरे नीचे उतर आते हैं। इस प्रकार यात्री स्विस पहाड़ों पर चढ़ते हैं।

दर्रे और चोटियां

आल्प्स पर्वतों में मान्ट ब्लांक सब से अधिक ऊँचा है। यह स्विस आल्प्स नहीं है वरन यह पर्वत फ्रान्स में है। इनके नीचे चमोनिक्स की घाटी है। यहां गर्मियों में दूर दूर के यात्री आते हैं। इस घाटी में आने का जो मार्ग है उसका दृश्य यात्री कभी नहीं भूल सकता। एक सड़क द्वारा यात्री इस घाटी में घुसते हैं। यह सड़क आर्वी नदी के घुमावदार तंग पहाड़ी रास्ते से आती है। इस नदी में बर्फीले पहाड़ों से पानी व बरफ बह बह कर आती है। सड़क के दोनों ओर ऊँचे पहाड़ो प्रदेश हैं। यह प्रदेश चीड़ और बलूत के वनों से घिरे हैं। जैसे ही यात्री घाटी में घुसता है। उसको नज़रों में सारा का सारा दृश्य गूँज जाता है। इन यात्रियों के सामने ही आल्प्स पर्वतों का राजा मान्ट ब्लान्क दिखलाई पड़ता है। प्रत्येक सात्त यात्री

यहां चढ़ने के लिये आते हैं। और मरडे ग्लेस आदि ग्लैशियर्स का दृश्य देखते हैं।

मान्टब्लान्क के पूर्व की ओर सेन्ट बर्नड का प्रसिद्ध दर्रा है। इस घाट होकर एक प्राचीन सड़क अब भी चालू है जिस पर ग़रीब यात्री यात्रा करते हैं। यह सड़क इटली और स्विज़रलैण्ड के गरीब यात्रियों के लिये बड़ा ही उपयोगी है। दर्रे के समीप ही सेन्ट बरनर्ड का अखाड़ा है जहां साधू और सेन्ट बरनर्ड कुत्ते रहते हैं। यह कुत्ते तूफान में लोप हुए व्यक्तियों के ढूढ़ने में बड़े ही उपयोगी होते हैं।

जब बरफ की अधिकता होती है तो सड़क के चिन्ह लोप हो जाते हैं और सड़क का मार्ग मालूम करना कठिन हो जाता है। ऐसी दशा में जब तूफ़ान आते हैं तो अखाड़े के साधु और कुत्ते लुप्त मनुष्यों की तलाश में निकलते हैं। बहुधा यह लोग यात्रियों को बरफ के नीचे दबा हुआ पाते हैं। यदि समय पर यह बरफ के नीचे दबे हुए मनुष्य के पास पहुँच जाते हैं तो उसे जीव दान देने में यह लोग समर्थ होते हैं। बहुत से कुत्ते बरफ के नीचे दबे हुए व्यक्तियों की



तलाश में बड़े ही होशियार होते हैं। बैरी नामक कुत्ता इन कार्यों में बड़ा ही चतुर था। उसने अपने जीवन काल में बहुत से व्यक्तियों को बचाया है। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी याद में उसकी स्मृति बनाई गई है।

सेन्ट बरनर्ड के पूर्व ज़र्मट नामी दूसरा स्थान है जहाँ लोग ठहरते हैं। यह स्थान स्विस लोगों का ही है। यहाँ मैटर हार्न और इसके कुछ दूर मान्टे रोज़ा के प्रसिद्ध स्थान हैं। यहां के ग्लेशियर प्रसिद्ध हैं। मैटर हार्न शिषा एक वृत्त के समान है। मान्टे रोज़ा मान्ट ब्लान्क के बाद स्विज़रलैण्ड में सबसे ऊंची चोटी है।

१४ जौलाई सन् १८६५ को पहले पहल चढ़ने वाले यात्री मैटरहार्न पर चढ़े। यह यात्रा बड़ी प्रसिद्ध है। चार अंग्रेज़ यात्री तीन पथ प्रदर्शकों को लेकर चढ़े वे चढ़ती बार कुशल पूर्वक चोटी पर पहुँच गए किन्तु लौटती बार जिस रस्सी में यह लोग एक दूसरे को बाँधे थे वह टूट गई जिसके कारण तीन अंग्रेज़ और एक पथ प्रदर्शक सर के बल नीचे चट्टान पर आ गिरे। बाक़ी कुशलपूर्वक नीचे उतरे और सब हाल लोगों से

बताया। लोग शीघ्र ही गिरे हुए व्यक्तियों की तलाश में गए किन्तु उनकी लाश के सिवा कुछ न मिला।

ज़र्मट के उत्तर राइन नदी की घाटी के दूसरी ओर ओबर लैण्ड और जंग फिर की चोटियाँ हैं। ओबर लैण्ड में अनुपम दृश्य हैं। यहां की लहलहाती घाटियाँ बरफ और पत्थर की बड़ी दीवारों भरी हैं। ट्राइण्डलबाल्ड की घाटी में ईगर और विटर हार्न की सुन्दर चोटियां हैं।

आल्प्स पर्वतों पर इटली जाने के लिये बहुत से घाट हैं। इन घाटों में विशाल और सुन्दर सड़कें हैं। स्विस पहाड़ी सड़कों की कला कौशल बड़ी ही अनोखी है। ऐसे २ ऊंचे और विशाल पर्वतों के ऊपर सड़के इतनी चतुरता से आगे पीछे घुमा घुमा कर बनाई गई हैं कि प्रत्येक स्थान पर सड़क बराबर दिखाई देती है कहीं कहीं पर तो ये सड़कें अपने ही ऊपर दो दो बार घूम कर आती हैं। किन्तु इनकी चढ़ाई सदैव बराबर और सरल होती है। इन सड़कों पर पांच घोड़े वाली गाड़ियाँ (कोचेज़) चलती हैं। सड़कें ऐसी सुगम हैं

कि यह घोड़े बराबर दौड़ते चक्कर काटते अपनी भरपूर चाल से चले जाते हैं।

इन सड़कों के बनाने में बड़ी २ कठिनाइयाँ सामने आईं। बहुत से ऐसे स्थान हैं जहाँ पर्वत ने बिलकुल मार्ग को ऐसा बन्द कर रक्खा था। कि शायद वही मार्ग का अन्त पर्वत के कारण रहा हो किन्तु चतुर इंजीनियर हिम्मत नहीं हारे वे पर्वतों के दीवालों के अन्दर घुसे और उन्होंने सुरंगें बनाईं। रोशनी के लिये बड़ी २ चट्टानों को काट २ कर सूराख बनाए और इस प्रकार अपना मार्ग बनाया। यदि कहीं खन्दक़ या खाई पड़ी है तो उस पर पुल बनाकर रास्ता साफ़ किया गया है। जब कहीं किसी स्थान पर बर्फ़ीले तूफ़ान का डर हुआ है तो वहां मेहराब बना २ कर छत डाल दी गई हैं। जिससे बर्फ़ का तूफ़ान ऊपर ही ऊपर पास हो जाता है।

इन सड़कों से अधिक कठिनाई इन पर्वतों के सुरंगों के बनाने में हुई है। मान्ट सेनिस (फ्रान्स) सेन्ट गोथर्ड और सिम्पलन (स्विज़रलैन्ड) आदि पर्वतों में सुरंगें बनाई गई हैं। सिम्पलम की सुरंग सब से बड़ी और

सब से बाद को बनी हुई है। यह १२½ माल लम्बी है और समतल से इसकी अधिक से अधिक ७००० फीट गहराई है।

इसके बनाने का कार्य्य १८६८ में आरम्भ हुआ। इटली और दोनों ओर से इन्जीनियरों ने पहाड़ काटना आरम्भ किया और सात साल के बाद एक दूसरे के समीप आए। मार्ग में सब से बड़ी दिक्कत यह पैदा हुई कि एक पृथ्वी के अन्दर नदी मिली। ऊपर से उसकी धार बदली गई उसके बाद ५० गज़ की सुरंग खोदी गई जिसमें एक हज़ार पाउंड प्रति गज़ के भाव से खर्च पड़ा। १६०५ ई० में यह सुरंग तय्यार हुई।

स्विस लोगों के खेल कूद

स्विस लोग अपना अधिक समय खेल तमाशों में नहीं व्यतीत करते क्योंकि स्विस जाति एक काम काजू जाति है और पक्के इरादे के साथ यह जाति अपनी जीविका कमाने में लग जाती है। किन्तु जब कभी कभी छुट्टी होती है तो नवयुवक लोग इकट्ठा होते हैं



और अपना समय गाने बजाने में आनन्द पूर्वक व्यतीत करते हैं। स्विस लोग गान विद्या से बड़ा प्रेम करते हैं और सब से अधिक वे गाने के स्वर को प्यार करते हैं। जब इन लोगों का समूह पर्वत के ऊपर जाता है तो इन लोगों के गाने के ध्वनि से पहाड़ गूँज जाता है। अच्छे गवइये की पीछे सदैव एक भारी भीड़ लगी रहती है।

स्विस लोग छुट्टियां बहुधा नाचने में व्यतीत करना पसंद करते हैं। नाच एक बहुत ही पवित्र वस्तु मानी जाती है इसलिये जब नाच होने लगता है तो बिल्कुल सन्नाटे का समय रहता है। लड़कियों का नाच अच्छा होता है। वे हल्के २ पाँव उठाती है, घूमती हैं और फुर्ती व मुस्तैदी के साथ अपना नाच करती हैं किन्तु मनुष्यों का नाच तो केवल एड़ियों पर पर्श के ऊपर एक प्रकार का उछलना कूदना ही होता है। गाने में सदैव दो या एक सारंगी रहती है। गाने वाले मस्त मुस्तैदी से अपना राग अलापते हैं और सुनने वाले शांत पूर्वक गाना सुनते और झूमने में मस्त रहते हैं।

नवयुवकों के व्यायाम के क्लब या संग होते हैं। समय समय पर इन क्लबों के बीच आपस में दोस्ताना तरीक़े

पर मुक़ाबिला होता है। यह मुक़ाबिला बड़ा समारोह के साथ मनाया जाता है। अधिकतर यह व्यायाम और खेल कूद अंग्रेज़ों के भांति ही होते हैं। किन्तु नैशनल स्पोर्टस (राष्ट्रीय खेल कूद) और देशों से भिन्न होते हैं। भारतवर्ष की भांति यहाँ भी पत्थर फेकने, कुश्ती लड़ने, व ऊंची कूद कूदने इत्यादि के खेल होते हैं जो अजनवी मनुष्यों के लिये बड़ी आनन्द की वस्तु होती है। कुश्ती भी यहां भारतवर्ष की भांति ही लड़ी जाती है अन्तर केवल यही होता है कि भारत वर्ष के पहलवान लगोट जांघिया का प्रयोग करते हैं। जांघिया बदन से बिलकुल सटी रहती है किन्तु स्विस लोग अन्डर वियर जांघिया के ऊपर हाफपाइन्ट की भांति एक कपड़ा पहनते हैं जो ढीला रहता है और कमर में एक मज़बूत पेटी बांधते हैं। कुश्ती बिलकुल भारत वर्ष के समान लड़ी जाती है। लड़ने के बाद दोनों पहलवान आपस में मिलते हैं और कुछ आराम करते हैं वे साथ ही शराब भी पीते हैं और फिर हाथ मिलाने के बाद अपने अपने स्थान जाते हैं।

दूसरा खेल राइफल चलाने का होता है। प्रत्येक

खेल नहीं वरन् यह एक प्रकार का प्रत्येक स्विस का कर्तव्य सा होजाता है कि वह राइफल से निशाना लगावे क्योंकि सभी स्विस को सैनिक बनना पड़ता है। छुट्टियों के अवसर पर स्विस लोग सवेरे से रात तक निशाना लगाते रहते हैं और बूंदकों को आवाज़ सुनाई देती रहती हैं।

स्विस लोगों के खेलकूद के सिवा और दूसरे गर्मी व जाड़े के खेल कूद भी होते हैं जिनका मज़ा उठाने के लिये विदेशी लोग आते हैं। यह लोग या तो बरफ पर चलने वाले जूते पहन कर बरफ पर चलने या दौड़ने का खेल करते हैं या बरफ पर फिसलने का खेल खेलते हैं। यहां पहाड़ों पर सूर्य कड़ाके के साथ चमकता है। इसलिये बरफ के खेल के खिलाड़ी आनन्द पूर्वक खेल खेलते हैं, शुद्ध हवा का पान करते हैं और सुन्दर धूप का आनन्द उठाते हैं। बरफ पर फिसलने वाले ढालू स्थान चाहते हैं और स्विज़रलैण्ड तो बिलकुल ढालुओं से बनाही है। ये ढाल बर्फों से ढके हैं। इनपर फिसलने वाले बड़ी ही सुगमता और फुर्ती से फिसलते हैं। इसमें फिसलने वालों को स्वर्गीय आनन्द प्राप्त होता है।

ये खेल धीरे और तेज कई प्रकार के होते हैं कुछ लोग जो बुड्ढे या नौसिखिये होते हैं। वह धीरे धीरे कम ढाल वाले स्थानों में पिसलते हैं। ढाल जितना ही अधिक खड़ा होता है उतनी ही अधिक चतुरता की आवश्यकता होती है। और उतनी अधिक फुर्ती के साथ फिसला भी जाता है।

इनगैन्डाइन स्थान पर क्रेस्टा और मोरिज़ ढाल इन खेलों के लिये बड़े प्रसिद्ध हैं। यहां के ढाल बड़े प्रसिद्ध हैं। यहां के ढाल बड़े सीधे हैं। क्रेस्टा १००० फुट लम्बा है। और सीधी पहाड़ी के नीचे की ओर आता है। यह पूरी एक ठोस बरफ की चट्टान हैं। पानी इस पर होकर बहता है और जब कभी रात में पाला पड़ता है तो यह मैदान सुन्दर खेल के योग्य बन जाता है। इन पर बड़े ही चतुर खेलाड़ी फिसलते हैं। क्योंकि ऐसे ऐसे घुमाव है जहां यदि ज़रा भी ग़लती हुई कि खेलाड़ी सर के बल नीचे जा गिरता है।

प्रत्येक साल मुकाबला होता है। और दौड़े में जो सब से अव्वल होता है उसे एक अच्छा कप मिलता है यह १००० गज़ की दौड़ एक मिनट से भी कम मे तै की जा चुकी है। चतुर खेलाड़ी हाथ और पैर दोनों

से सरकने में ठेस लगाते हैं किन्तु जो केवल घूमने की दृष्टि से जाते हैं वे सिलेज पर बैठ कर पैरों के सहारे फिसलते हैं।

इससे शायद ही कोई दुसरी अच्छी दौड़ होती हो। साफ सुथरी चमकीली बरफ के ऊपर स्वच्छ ठंडी वायु में लोग दौड़ते हैं मार्ग में कहीं सूर्य की अनुपम रोशनी रहती है तो कहीं वृक्षों की छाया होती है। कभी बादलों की छाया हो जाती है तो कभी सूर्य का प्रकाश हीरे का मैदान बना देता है। खेलाड़ी तेज़ी के साथ सरकता हुआ घाटी में पहुँच जाता है और दूर तक बराबर भूमि पर सरकता चला जाता है। इस प्रकार घंटों की चढ़ाई एक मिनट की दौड़ में समाप्त हो जाती है।

बरफ पर चलने का एक दूसरा खेल और होता है। आजकल यह भी बहुत प्रसिद्ध हो गया है।

इस खेल में दो, सात या नौ फीट लम्बे तख्ते होते हैं जिनकी चौड़ाई पैर के बराबर होती है। इनको "शीज" कहते हैं। सीखने वाले इनपर ठुमक २ कर चलते हैं। अक्सर यह चलाने वाले एक दूसरे से ठुकरा

जाते हैं और गिर भी पड़ते हैं। किन्तु थोड़े अभ्यास से ही मनुष्य अपने पैर ठीक तौर से रख सकता है और अपना भार संभाल सकता है। वह घूमना भी सीख जाता है।

जो इस कार्य्य में चतुर होते हैं वे आश्चर्य जनक कार्य दिखाते हैं। वे चालीस मील प्रति घंटे की चाल से दौड़ते हैं। सीधे ढाल पर सौ २ फीट उछल जाते हैं। फिर बरफ़ पर आ गिरते हैं और तेज़ चाल से चलने लगते हैं। इनपर चलने वाले कठिन से कठिन बर्फीले स्थान पर जहाँ वे पैदल नहीं जा सकते चले जाते हैं। प्रत्येक शीत काल में स्विस सेना का एक भाग इस प्रकार बर्फ पर चलने का अभ्यास करता है। अब तो बुड्ढे, जवान और बच्चे सभी ऐसा करने लगे हैं। पर्वतों के ऊपर लड़के इन्हीं "शीज़" बरफ पर चलने वाले जूतों के सहारे घर से स्कूल पढ़ने के लिये जाते हैं। ये शीज बहुधा उन्हीं बालकों के स्वयं मा बाप के हाथ के बनाए हुए होते हैं।



"स्विज़रलैण्ड के सांभर"

जंगली जानवरों में स्विज़रलैण्ड के अन्दर साँभर सब से अधिक प्रसिद्ध है। इस सुन्दर पशु को बहुधा विदेशी यात्री नहीं देख सकते क्यों यह पर्वतों के ऊपर रहा करता है और बड़ा ही शरमीला होता है। ज़रा सी आदमी की आवाज़ अथवा महक पाते ही आखों से ओझल हो जाता है यह सींग वाला पहाड़ी हिरन लगभग बकरियों के बराबर होता है। यह ५० से ७० पौंड तक तोल में होता है।

इन साँभरों की सीगें १० से १२ इंच तक लम्बी होती हैं। सींगें सिरे पर पतली और तेज़ होती हैं वे हुक की भांति झुकी रहती हैं। वे हुक की भांति झुकी रहती हैं। सांभर के शिकारी इन सींगों को बहुत प्यार से रखते हैं क्योंकि ये ही सींग उनके सांभर के शिकार के चिन्ह होते हैं। एक दूसरा चिन्ह नर साँभर की डाढ़ी भी होती है। यह डाढ़ी बकरियों की भांति ठुड्डी पर नहीं होती यह डाढ़ी पीठ की रीढ़ की हड्डी पर होती है। जाड़े के दिनों में जब हिरन के बाल जमते हैं तो उसकी पीठ की हड्डी पर लम्बे लम्बे बाल उगते हैं। इन

बालों का रंग काला चमकदार होता है। इन बालों के सिरे सुनहरे रंग के होते हैं। और सीधे खड़े हवा में उड़ते रहते हैं। शिकारी लोग इन बालों के गुच्छे अपनी हैटों में लगाते हैं। यह बाल बड़े मँहगे होते हैं एक सुन्दर दाढ़ी का दाम दस दस पौंड तक होता है।

गर्मी के दिनों में ये साँभर घास और शिकार खाते हैं। जाड़े के दिनों में वे जंगलों में उतर आते हैं और यहाँ बलूत के पीड़ों के नीचे की घास और पत्तियों की कोंपले खाते हैं। बलूत के पेड़ की डालें बिलकुल भूमि से मिली हुई रहती हैं इसी से इनके नीचे घास बरफ से बची रहती है। ये बलूत के पेड़ छाया का कार्य करते हैं और बरफ से बचाते हैं किन्तु कभी कभी जब पेड़ों के चारों ओर भारी बरफ पड़ती है तो ये बिलकुल जेल हो जाते हैं जिनसे बचना बड़ा कठिन हो जाता है।

जब बरफ गिरती है तो उससे बचने के लिये सांभरों का झुन्ड बलूत के किसी बड़े पेड़ के तने के चारों ओर इकट्ठे हो जाते हैं। बरफ इतनी अधिक पड़ जाती है कि पेड़ की टहनियां बरफ से मिल जाती है। पानी भी बरसता है और फिर पाला पड़ता है इस प्रकार

बरफ बड़ी ही सख्त हो जाती है। ऐसी दशा में बेचारे सांभरों का झुन्ड जो कुछ भोजन उन्हें पेड़ के नीचे मिलता है उसे खाते हैं फिर जब कुछ खाने को नहीं रहता तो भूख के मारे अपने प्राण त्याग देते हैं।

यह इन सांभरों के लिये इनके ऊँचे पहाड़ी रहने वाले स्थानों पर एक बड़ा खतरा होता है। दूसरा खतरा इनके लिये बरफ के करारे होते हैं। जिनमें दब कर इनके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। ये करारे जून और जुलाई में बहुधा सांभरों के झुण्डों को बर्बाद करते हैं।

ये साँभर इन ऊँचे पर्वतीय प्रदेशों में इसलिये रहते हैं कि सैकड़ों वर्षों से लोग इनका शिकार करते रहे हैं। इसलिये ये परेशान होकर ऊपर पहाड़ी स्थानों पर चले गये हैं। इनके शिकारी को भी इन्हीं की भांति बड़ा ही चतुर होना चाहिये।

आल्प्स पर्वतों पर एक अच्छे शिकारी से बढ़ चढ़ कर दूसरा कोई पहाड़ पर चढ़ने वाला नहीं होता। ये शिकारी बरफ की चट्टानों की दीवालों पर होकर अपना रास्ता बनाते हैं जहां पर पैर रखने की भी मुशकिल से जगह होती है। ये शिकारी ऐसे मार्ग होकर चढ़ते हैं

जिनके नीचे बड़ी बड़ी बरफीली चट्टानें सरकती रहती हैं। नीचे बड़े बड़े पेड़ घासों की भांति बड़ी बड़ी नदियां पतले डोरे की भांति और चरते हुए जानवर बिन्दु की भांति दिखाई पड़ते हैं।

ये साँभर पाँच से लेकर २० तक एक गोल में होते हैं। एक मादा साँभर जब गोल चरता रहता है तो खड़ी ताकती रहती है। यह चरती नहीं वरन् आवाज़ और मनुष्य के गंध की पारिख करती रहती है। शिकारी को बड़ी चतुरता से काम करना पड़ता है वह चट्टानों के पीछे पीछे छिपकर ऊपर चढ़ता है। हवा के रुख को भी शिकारी बचाता है।

जब तक यह मादा सांभर रखवाली करती है दूसरे चरते रहते हैं। बच्चे, उछल कूद करते और खेलते रहते हैं। रखवाली करने वाली चारों चौकन्नी देखती सुनती और सूंघती रहती है। शिकारी भी इसी को ताकता रहता है। कि यह न मालूम कर सके। यदि शिकारी ने इसे धोका दे दिया तो फिर ज़रूर उसे शिकार मिल जाता है।

किन्तु शिकारी कितना ही यत्न करे तो भी किसी

तरह उसकी आहट रखवाले को मालूम हो जाती है। ज़रा सी आहट पाते ही वह एक बड़ी सीटी की आवाज़ लगाती है। इसको सभी समझ जाते हैं कि कुछ खतरा है। शीघ्र ही बच्चे अपना खेल बन्द करके माताओं के समीप आ जाते हैं। बड़े सांभर चट्टानों पर छलाँगें मार कर एक साइत शिकारी की आहट लेते हैं। उन्हें शीघ्र ही हवा द्वारा मालूम हो जाता है कि शिकारी किस ओर से आक्रमण कर रहा है।

फिर क्या यह सांभरों का झुंड नौ दो ग्यारह हो जाता है। ऐसे समय इनके लिये मार्ग की आवश्यकता नहीं होती ये चिड़ियों की भांति एक चट्टान से दूसरी पर होते हुए देखते २ आंखों से ओझल हो जाते हैं। इनकी ऐसे समय की भगदड़ बड़ी ही मनोरञ्जक होती है देखने वाले को पता ही नहीं चलता कि ये कब और किस पर अपना पैर रखते हैं। बिजली की भांति एक क्षण में इनका समूह गायब हो जाता है। फिर शिकारी मजबूर होकर दूसरे समूह की तलाश करता है।

बहुधा शिकारी लोग कई एक गोल बना कर शिकार खेलने जाते हैं। और सांभरों के समूह को चारों ओर

से गोला बनाकर घेर लेते हैं। ऐसी दशा में जब ये नीचे भागते हैं तो अवश्य ही मारे जाते हैं शिकारी लोग जहां समझते हैं कि साँभर भाग कर जाएँगे वहां पहले ही से डोर बांध देते हैं इन पर रंग बिरंगे कपड़े लटकते हैं। इनको देखकर सांभर उधर न जा दूसरा रास्ता पकड़ते हैं किन्तु जब विवश होकर इन्हें उसी रास्ते निकलना पड़ता है तो बहुतेरे तो छलांगे मार कर डांक जाते हैं और बहुतेरे अपने शरीर से रस्सी को धक्का देकर रास्ता बनाते हैं। इनकी सींगे अक्सर डोर में फंस जाती हैं। तब वे ऊपर उछलते हैं और फिर भूमि पर आते हैं और देखते देखते गायब हो जाते हैं।

साँभर के शिकार की कहानियाँ

साँभर के शिकारी को बड़ी २ कठिनाइयों, और खतरों और दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। बहुत सी अवस्थाओं में शिकारी मौत के मुंह से बचे हैं। एक बार एक शिकारी एक साँभर की तलाश में गया। वह जानता था कि वह सांभर एक बड़ी ग्लैशियर के पास चरा करता था। जब शिकारी ग्लैशियर को

पार कर रहा था तो एक बड़ी खंदक में जा गिरा। इस खंदक का मुंह भी बरफ से बन्द था। वह बेचारा बेहोश हो गया और कई घंटे के बाद होश में आया। उसके होश आने पर अपने को ज़िन्दा एक क़बर में देखा। उस की बरफ की दीवालें ऐसी थीं कि उन पर चढ़ना असम्भव था उसे किसी प्रकार की सहायता की भी आशा नहीं थी। मालूम होता था कि उसकी मृत्यु उसी बरफ की खाई में होगी किन्तु वह एक साहसी पुरुष था और साधारण घाव से अपनी जान की आशा छोड़ने वाला न था। ऊपर की ओर जाने की आशा छोड़ उसने नीचे की ओर ध्यान दिया। ईश्वर की कृपा से उसने देखा कि नीचे पानी कम था। क्योंकि बहुधा ऐसे स्थानों पर पानी अधिक गहरा रहता है।

उसने घुटनों के बल बैठकर देखा तो पानी एक सुरंग में होकर बाहर जाता था। सूर्य की गर्मी से ग्लेशियर के नीचे का तल पिघल गया था और उधर से होकर पानी ने अपना रास्ता बना लिया था वह मुंह और पेट के बल लेट गया और उसी रास्ते से होकर बाहर निकला यद्यपि यह भी एक बड़े खतरे की बात

थी तो भी ईश्वर की कृपा से वह बाहर सूर्य के प्रकाश में आ निकला। इस प्रकार उसकी जान बची।

एक दूसरी कहानी एक किसान की है। कि वह एक बार शिकारियों की सहायता में था। एक बड़ा सांभर घायल होकर भागा, किसान उसके पीछे पड़ा। साँभर एक ऐसे स्थान की ओर गया जहां पर एक बड़ी सीधी ढाल थी। उस किसान के पास में एक राइफल थी किन्तु उसे उसने यह समझ कर छोड़ दिया कि वह दोनों हाथों के सहारे सुगमता से चढ़ सकेगा। उसने यह भी न सोचा कि राइफल की आवश्यकता भी होगी। साँभर मामूली तौर से घायल हुआ था जब किसान ने चाहा कि वह उसे पकड़े तो दोनों में युद्ध होने लगा। साँभर ने अपनी नुकीली सींग की हुक किसान के ऐड़ी में भोंक दिया। यह दोनों ऐसी ही दशा में लड़ते रहे। किसान ने ढाल के बिलकुल किनारे जान बड़ी बहादुर से युद्ध किया किन्तु बेकार सिद्ध हुआ अन्त में दोनों लड़ते लड़ते पहाड़ के ऊपर ढाल से लुढ़क पड़े। अब किसान के जीवन की बिलकुल आशा न थी। किन्तु दैवयोग से पेड़ की एक टहनी किसान के



मुंह पर लगी। शीघ्र ही उसने उसे पकड़ लिया फिर क्या था वह लटक गया। उसके नीचे साँभर भी लटक रहा था। यदि वह डाल टूट जाती तो उनके जीवन का अंत हो जाता किन्तु ईश्वर की कृपा से ऐसा ही हुआ। इसी बीच एक शिकारी सहायता को आगया। अंत में वह किसान और हिरन दोनों खींच कर चट्टान पर किये गए और बेचारा किसान उस भारी कष्ट से छुड़ाया गया।

तीसरी कहानी एक नौ जवान शिकारी की है। वह एक सीधी ढाल होकर छोटे सांभरों की खोज में ऊपर चढ़ रहा था। उसी समय उसने ऊपर से गरज की आवाज़ सुनी। उसने ऊपर देखा तो बरफ़ का एक भारी करारा नीचे गिर रहा था। उसने पीछे देखा किन्तु उससे बचकर पीछे जाना उसने असम्भव जाना। ऊपर उसने एक बड़ी निकली हुई चट्टान देखी। वह उसी की ओर लपका। करार तेज़ी से नीचे आ रहा था यह भी जल्दी जल्दी लपका जा रहा था। जैसे ही वह चट्टान के नीचे पहुँचा वैसे ही उसके सर से करारा पास हुआ यदि उसे दो सेकण्ड की भी देर होती तो अवश्य

ही उसकी मृत्यु हो जाती। उसके चट्टान के नीचे आश्चर्य पूर्वक देखा कि एक साँभर मादा अपने दो बच्चों के साथ पहले ही से आ रही थी। यह भी उन्हीं के साथ आगे बढ़ा। एक मिनट के अन्दर ही यह लोग बरफ़ की एक भारी चट्टान के कई फीट नीचे गड़ गए।

नवजवान शिकारी ने सोचा था कि शायद करारा चट्टान के ऊपर होकर आगे चला जावेगा। किन्तु ऐसा न हुआ। घंटों व्यतीत हो गए किन्तु फिर भी चट्टान के नीचे बिकट अँधेरा छाया रहा। तब उसने सोचा कि करारा चट्टान पर रुक गया और वह ज़िन्दा गाड़ दिया गया है।

उसने भाँति भाँति की बातें सोचनी शुरू कीं कि शायद लोग उसे ढूँढ़ने आवें किन्तु वे क्या जानेंगे कि वह किस जगह गड़ा है। उसके एक साथी की ऐसी दशा हो चुकी थी जो ढूढ़ने पर भी नहीं मिला था अन्त में जब बरफ़ पिघली तो उसका शरीर मिला।

वह इसी प्रकार की बातों के चक्कर में था और भाग्य के बारे में तर्क करता रहा। उसने समीप खड़े हुए साँभर बच्चों की कुछ भी परवा न की। यकायक उसने



साँभर के खुरों की आवाज़ सुनी। मालूम होता था कि शायद वह अपने सर से बरफ की दीवाल पर चोट कर रही हो साँभर ने अपने चारों पैरों से बरफ खरोचना आरम्भ किया। इन शब्दों को सुनकर युवक शिकारी ने भी सोचा कि वह भी बरफ खोद कर बाहर निकले किन्तु कहाँ खोदे कुछ पता न था। किन्तु साँभर ने कदाचित ऐसा स्थान जान लिया था। इस प्रकार साँभर और मनुष्य दोनों साथ कार्य्य करने लगे। साँभर अपने चारों पैरों से और शिकारी दोनों हाथों से बरफ खोद रहे थे। तीन घंटे के कठिन परिश्रम के पश्चात् मालूम हुआ कि साँभर का अंदाज़ बिलकुल ठीक था। बरफ़ की तह अब पतली हो गई थी और प्रकाश मालूम होने लगा था। अंत में वे सब बाहर सूर्य्य के प्रकाश में आए। साँभर अपने बच्चों के साथ ढाल की ओर भाग गई और शिकारो ने अपने घर का रास्ता लिया। शिकारी के ऊपर इसका इतना बड़ा प्रभाव पड़ा कि फिर उसने कभी भी साँभर का शिकार अपने जीवन काल में नहीं किया।

फ़ान (लू)

बसन्त ऋतु में कभी कभी चतुर लोग जिनको ऋतु का ज्ञान होता है, वे दक्षिण की ओर आकाश की रँग बिरँगी बदलती दशा देखकर अनुमान करते हैं कि गर्म हवा की आंधी आने वाली है। उस समय आकाश पीला और लाल दिखाई पड़ता है। सूर्य पश्चिम की ओर डूबते हैं तो उनकी करणें चमकती नहीं दिखाई पड़तीं और जब चन्द्रमा उदय होते हैं तो उनके चारों ओर ललामी छाई रहती है। कुछ ठँडी हवा के झोंके चलने लगते हैं इस समय मनुष्य, पशु, पक्षी सभी को आभास हो जाता है कि अब गर्म हवा की आंधी आने वाली है।

थोड़ी देर के पश्चात् पहाड़ की ओर से संसनाहट का शब्द सुनाई देने लगता है। धीरे धीरे शब्द गम्भीर तथा ज़ोर होता जाता है और एकाएक गर्म-हवा के तीव्र झोंके चलने लगते हैं।

पहाड़ी प्रदेशों में यह आंधी एक बड़े तूफान का रूप धारण कर लेती है। यह बड़े बड़े पेड़ो को गिरा



देती है, घरों के छप्परों को उड़ा ले जाती है। जैसे ही यह आती है वैसे ही घरों की आग बुझा दी जाती है यदि तनिक भी ग़लती हुई तो फिर गांव के गांव अग्नि के प्रकोप से नाश हो जाते हैं।

जब आँधी आती है तो चिड़ियाँ ऐसे स्थानों पर छिप जाती हैं कि उनका पता नहीं रह जाता। पशुओं को तो पहले कुछ आराम मिलता है किन्तु थोड़ी देर के बाद उनकी भी दशा खराब हो जाती है वे भी परेशान और सुस्त हो जाते हैं। मनुष्यों की भी दशा बिगड़ जाती है। इस समय बहुत कम लोगों का तबीअत अच्छी और ठीक रहती है।

ऐसी दशा होते हुए भी लोग इसके आने पर खुशी मनाते हैं। गर्म हवा के चलने से सरदी कम हो जाती है। बरफ तेज़ी के साथ पिघलने लगती है। गर्म वायु के झोंके कुछ ही घंटों में २५ या ३० इञ्च मोटी बरफ़ पिघला कर साफ कर देते हैं। वह घाटियाँ जहाँ कभी भी सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंचता वहाँ की भी बरफ गर्म हवा के ज़ोर से पिघल जाती है और वहाँ सुन्दर पशुओं के लिये हरी घास उग आती है। और रँग विरँगे फूल

खिलने लगते हैं। अगर यह हवा न चले तो ऐसी घाटियाँ सदैव बरफ से जमी रहें।

आल्प्स पर्वतों के ऊपर की बरफ और ग्लेशियर जल्द पिघल कर बह जाते हैं और बड़े घास के मैदान चराई के लिये खाली हो जाते हैं। इस प्रकार गर्मी की ऋतु बढ़ जाती है। किन्तु जब इस हवा के वेग से ग्लैशियर पिघलते हैं तो एकाएक बरफ के ग्लैशियरों के तूफान आ जाते हैं जिससे पहाड़ के नीचे बसने वाले गाँव, आदमी और पशु सभी बरबाद हो जाते हैं।

कभी कभी यह गरम हवा धीरे धीरे हफ्तों आल्प्स पर चलती रहती है जिससे वहाँ दिसम्बर, जनवरी ही से सुन्दर हरयाली और पुष्प वाटिकाएँ हो जाती हैं। जब कि वहीं पहाड़ों के नीचे घाटियों में बरफ की बड़ी मोटी तहों के नीचे देवदार आदि के पेड़ छिप रहते हैं।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य